







## पितृभक्ति

सुदर्शन संगी था। जो मन में आता कर बैठता था। बड़े लोगों की बातें सुनने तैयार ही नहीं होता था। परंतु वह जो काम करना चाहता था, उसके बारे में आप ही आप धनी भांति सोचता-विचारता था। फिर निर्णय पर आता था। निर्णय ले लेने के बाद उस निर्णय में किसी प्रकार का परिवर्तन करने वह तैयार नहीं होता था। कोई कुछ भी कहे, सुनता नहीं था। उसकी विचार-पद्धति कुछ निराली होती थी। किसी प्रकार का नृत्न प्रयोग करने पर भी वह शिथिलता नहीं था। अपने बेटे के इस व्यवहार पर उसका पिता प्रभाव बहुत ही दुखी था।

प्रभाव बुद्धिमान था और व्यावहारिक भी। साथ ही अच्छे स्वभाव का भी। परंतु वह भी अपने बेटे की तरह सलकी था। लोग कहते रहते थे कि उसी से उसका बेटा भी ऐसे स्वभाव का शिकार हो गया।

“हाँ, मैं मजबूत हूँ, परंतु रोति और परिपाटी का अनुसरण करता हूँ। मैं अपने पिता के प्रति भक्ति-भाव रखता हूँ। आज मैं खुशहाल हूँ, इसका कारण केवल मेरी पितृभक्ति ही है। मेरा बेटा भी मेरा अनुसरण करे, मेरे अनुभव का लाभ उठाये, तो बहुत ही अच्छा होगा।” प्रभाव कहता रहता था।

सुदर्शन चाहता नहीं था कि किसी दूसरे के अनुभव से कुछ सीखूँ। उसका दावा था कि स्वानुभव से बहुत कुछ सीखा जा सकता है। उसके बचपन में उसे आम खूने से मना किया, परंतु आम खूने के बाद ही उसे मान्य हुआ कि आम जलती है। तभी उससे बड़ों की बातों का विश्वास किया। जब वह थोड़ी और बड़ी उस का हो गया, तब लोगों ने उसे बताया कि गाँव के तालाब में मगरमच्छ है तो वह जलने तालाब में कूद पड़ा कि सचमुच उसमें मगरमच्छ है या नहीं।

सुविज्ञ

बेचारा किसी तरह बच निकला।

परंतु हाँ, सुदर्शन के उलूख स्वभाव के कारण थोड़ी बहुत सलाई भी हुई। उस गाँव में भंगला नामक एक विधवा बहुत बड़े घर में रहा करती थी। वह अचानक रोग-ग्रस्त होकर मर गयी। उसके बुरे का एक रिश्तेदार वह घर बेचना चाहता था, लेकिन इतने में शफावत फैली कि उस घर में यंत्राला भूतनी बनकर घूम-फिर रही है। दर का वह रिश्तेदार कम दाम में ही सही, घर बेच डालना चाहता था, किन्तु कोई भी खरीदने के लिए तैयार नहीं था। सुदर्शन वह घर खरीदना चाहता था, पर पिता ने मना कर दिया। उस वह अकेले ही तीन रातों उस घर में गुजारी और उसने साबित कि तयाकपित ऐसी कोई भूतनी उस घर में नहीं रहती। पिता से उसने वह घर खरीदवाया।

प्रभाव को इस बात पर नानंद हुआ कि बेटे के कारण सलाई हुई। जब उसका यह साहसापूर्ण प्रयोग सफल हुआ, तब से सुदर्शन पिता की बातें सुनने के लिए तैयार हो नहीं होता था।

प्रभाव दस एकड़ों की उपजाऊ जमीन का मालिक था। बड़ी ही देखता से वह खेती-बाड़ी कर रहा था। उसका समझना था कि वेत उसका साथ देगा तो दस एकड़, बीस एकड़ हो जायेंगे और गाँव में वह बड़ा किसान बन सकेगा।

परंतु सुदर्शन की विचारधारा कुछ और हो थी। वह सोचता था कि खेती में आखिर मिलेगा थो तो क्या मिलेगा? कितनी भी मेहनत करे, वहाँ हैं, वही होयें। बंगर इतनी मेहनत व्यापार में की जाय तो लाभ घर में कम से कम लाख रुपये कमा सकते हैं और



सुसंपूर्ण जीवन बिता सकते हैं। उसने एक दिन अपने पिता से कहा भी कि थोड़ी-थी जमीन बेच दी जाए और वह रकम उसे दी जाए तो शहर जाकर व्यापार करूँगा। उसने अपने पिता से जोर देकर कहा “खेती करते रहने से आखिर हमें क्या मिलेगा? जहाँ है, वहीं सड़ते रहेंगे। हमारी कोई आर्थिक उन्नति नहीं होगी। आदमी को चाहिये कि वह कुछ नये प्रयोग करे और अपने को उन्नति के पथ पर ले जाए। वह कुछ कर दिखावे, तभी उसका जीवन सफल व सार्थक कहा जा सकता है।”

तब प्रभाव ने अपने बेटे को समझाते हुए कहा “बेटे, व्यापार हमारे परिवार को रात नहीं भरयेगा। हम जो कहना चाहते हैं, साफ-साफ कह देते हैं; भ्रष्ट हैं। हम तो निर और ईमानदारी में विश्वास रखते हैं। व्यापार





में कमाल हो तो थोड़ा-बहुत कपटी होना आवश्यक है। छोसा बिने लिनर कमाला नहीं जा सकता। सुक भी बोलना पड़ता है। अगर हम इनसे दूर रहें तो हमें किसी भी स्थिति में सफलता नहीं मिलेगी। खेती करो तो मेरा अनुभव भी तेरे लिए उपयोगी सिद्ध होगा। किसी भी क्षेत्र में प्रवेश करने के पहले उसमें अनुभव की जरूरत पड़ती है। व्यापार में तुम्हारा कोई अनुभव नहीं। मैं भी नहीं जानता कि आखिर यह व्यापार है क्या? इसलिए मेरे अनुभव का फायदा भी तुम उठा नहीं सकते। कृपि हमारी परंपरागत वृत्ति है। इसमें उत्तर-पड़ान कम होते हैं। मेरी बात मानो और यहीं रहकर खेती करो, मेरा साथ दो।”

अपने पिता की बातों पर हैसकर सुदर्शन ने कहा “जरूरत पड़ी तो व्यापारी के लिए

जो लक्षण चाहिये, सब सीख लूँगा। व्यापार में कामयाबी पाने के लिए कुछ भी करूँगा। अब रहो आपके अनुभव की बात। उसकी मुझे कोई जरूरत नहीं। अगर खेती करूँगी, मैं आपका अनुभव उपयोग में नहीं लाऊँगा। आप तो व्यापार का कोई अनुभव नहीं रखते, इसलिए अच्छा यह होगा कि आप मुझसे दूर रहे, मुझे मनाहें न दें।”

सुदर्शन का समर्पण किया उसकी माँ ने। प्रभाकर इस बात पर बहुत दुखी हुआ कि बेठा उसकी कोई परवाह नहीं कर रहा है और उसके प्रति उसमें कोई आदर-भाव नहीं है। वह छेत बेचना नहीं चाहता था। और पांच एकड़ खरीदने के लिए उसने रकम जमा कर रखी थी। उसने वह रकम बेटे को दी और कहा कि जैसा चाहते, करो।

सुदर्शन ने व्यापार शुरू किया। प्रारंभ में लाभ हुआ। इसे बनाए रखने के लिए वह अनौति के मार्ग पर चला, दूसरों को धोखा देता रहा, सब से झूठ बोलता रहा। परिस्थिति ही कुछ ऐसी थी, जिसके कारण वह उनसे दूर नहीं हो पाया। उसने एक ही साल में पिता ने जो दिया, उससे तीन गुना ज्यादा कमाया।

बेटे की इस कामयाबी पर उसे वधाई देते हुए प्रभाकर ने कहा “तुम बड़े ही समर्थ हो। मैंने तुम्हें गलत समझा। तुम्हारे मूल्य को कम आँका। अगर तुम्हें मंजूर हो तो पूरी अमीन बेच दूँगा और तुम्हारे व्यापार में भागीदार बनूँगा।”

अपने पिता की इन बातों पर सुदर्शन निष्कुल चुप नहीं हुआ। वह अपने पिता से चिढ़ भी गया। उसने पिता से कहा “गोव के

लोहों को उपदेश देते रहते हो, हित-बोध करते हो, किन्तु अब मैं समझ गया कि तुम्हारी दृष्टि में धन ही सब कुछ है। अनौति, छल-कपट, असत्य मनुष्य को धन दे सकते हैं, किन्तु संतुष्टि नहीं। यह मैं अपने अनुभव के आधार पर जान गया। नीति व मूल्य-मार्ग पर चलकर एक और वर्ष तक व्यापार चलेगा। ऐसा करने के बाद भी अगर मैं लाभ कमाता जाऊँगा तो व्यापार को बरतना शुरू करूँगा। नहीं तो व्यापार छोड़ दूँगा और खेती करूँगा। जब तक मैं किसी को अपने व्यापार में भागीदार बनाना नहीं चाहता।”

वर्ष पूरा होते-होते सुदर्शन के पास जो था, व्यापार में सब कुछ छो दिया। अब उसने निर्णय किया कि व्यापार छोड़ दूँ और खेती करूँ।

उसके निर्णय का आदर प्रभाकर करता पर सुदर्शन ने साफ़ कह दिया कि खेती अपनी पद्धति से करूँगा। उसने कहा कि जिस खेत

में अनाज पकता है उसमें सबकु के पौधे रोपूँगा। आम के पेड़ काट डालूँगा और उनकी जगह पर तारियल के पौधे रोपूँगा। पिता ने इसे समझाया कि जो पेड़ हैं, उसे क्यों काटते हो, जमीन खरीदो और जैसा तुम चाहते हो, करो। सुदर्शन ने अपने पिता की इस सलाह को मानने से इनकार किया। उसने अपने बेटे को समझाने की बहुत कोशिश की, पर जब वह अपनी जिब पर अड़ा रहा तो उसने कहा “जब तक मैं जिन्दा रहूँगा, सब तक यही होगा, जो मैं चाहता हूँ। अगर तुम्हें अपने बिचारों पर इतना ही भरोसा है तो गयी ज़मीन खरीदो और प्रयोग करो।

सुदर्शन तैयार बैठ गया। उस गाँव में प्रकाश नामक एक संपन्न किसान था। जो एकड़ की उसकी ज़मीन थी। पचा उसकी इकलौती पुत्री थी। सुदर्शन का रूप देखकर वह उसपर मुग्ध हुई। हठ किया कि शादी





कहेगी तो मैं उसी से कहूँगी। प्रकाश, सुदर्शन को इस एकदो की ज़मीन देने तैयार हुआ और उससे कहा "जैसा चाहते हो, खेती करो। परंतु एक शर्त है, तुम्हें बेटी-बेटों से विवाह करता होगा।"

रिश्ता अच्छा था, किन्तु उसमें एक अड़चन था। प्रकाश और प्रभाकर कट्टर बुद्धन थे। वे एक-दूसरे से ओलते तक नहीं थे। इसलिए प्रकाश ने सुदर्शन से कहा "अगर तुम मेरी बेटी से शादी करोगे तो तुम्हें अपने माँ-बाप से दूर रहना होगा। तुम दोनों को अलग परिवार बसाना होगा।"

सुदर्शन ने प्रकाश की शर्तों के बारे में अपने माँ-बाप को बताया।

यह विषय जानकर सुदर्शन की माँ चिंताग्रस्त हो गयी। उसकी बड़ी इच्छा थी

कि वह ससुराल आवे, पति की अच्छी तरह से देखभाल करे, घर सँभाले और सब मिल-जुलकर आनंदपूर्वक जीवन बिताये। वह बेचारी लाचार थी। उसने गोपालस्वामी के घर जाकर अपना दुखड़ा सुनाया।

गोपालस्वामी कहता रहता था कि उसके पास महिमाययी एक जड़ी-बूटी है। उसका दावा था कि उसके प्रभाव से किसी के भी मन को वह बदल सकता है। परंतु दो दिनों तक उस आदमी को उसके पास आना होगा। दूसरी ही बार वह बूटी उस आदमी पर अपना प्रभाव दिखा पायेगी। सब कुछ मूर्खों के बाद गोपालस्वामी ने सुदर्शन की माँ से कहा "बड़ों ने कहा कि जैसी करनी, वैसी भरनी। तुमने जब अपनी बेटों की शादी की, याद है, तुमने उससे क्या कहा? तुमने अपनी बेटी से कहा कि अपना अलग परिवार बनाओ। अपने सास-ससुर को दूर रहो। तुम्हारी बेटी के सास-ससुर के द्वेष न घृणा ने ही तुम्हें इस स्थिति पर ला खड़ा कर दिया। तुम अपना स्वभाव बदलो और अपने बेटों को सही मार्ग पर ले आओ। तुम्हारा बेटों के सास-ससुर संतुष्ट हो जाए तो तुम्हारी भलाई होगी।"

"इस विषय पर चर्चा करने के लिए मैं यहाँ नहीं आया। सुदर्शन में पितृभक्ति नाम मात्र भी नहीं रहा। मैं यह कहने लाया हूँ कि आप उसमें पितृभक्ति उत्पन्न करें।" सुदर्शन की माँ बड़ी ही चालाकी से बात बयलती हुई बोली।

"ठीक है, जो मुझसे होगा, कहूँगा, पर

यह मन समझना कि जब तक अपनी बेटी के विषय में तुम्हारा स्तन नहीं बरलेगा, तब तक

तुम्हारे बेटे के विषय में, कुछ ऐसा होगा, वैसा तुम चाहती हो।" गोपालस्वामी ने यो कहकर उसे माफगान किया।

सुदर्शन की माँ ने उसकी बेतावनी को कोई विशेष महत्व न देते हुए कहा "मेरे बेटे के मन में परिवर्तन लाना हो तो उसे दो दिन यहाँ आना होगा। है न? तुमने कहा कि दूसरे ही दिन वह जड़ी-बूटी अपना प्रभाव दिखा पायेगी। इसलिए पहले दिन मेरे बेटे के सामने उसके बाप की खूब गाली देना। तभी वृद्धे दिन वह तुम्हारे पास आवेगा।" उसने उसे उपाय बताया।

"मैं कुछ भी करूँ, पर होगा वही, जैसे उसकी बुद्धि है। मैं अपना प्रयत्न करूँगा। अब तुम जा सकती हो।" गोपालस्वामी ने कहा।

घर जाने के बाद सुदर्शन की माँ ने जो हुशा, सब कुछ पति से बताया और कहा "अब आप निश्चित रहिये। मन मुटाव सब आप हो आप दूर हो जाएँ।"

"आज तक तुमने महसूस नहीं किया कि उसमें पितृभक्ति नहीं है। तुमने तो समझ रखा था कि वही मुझसे बचाव अस्तसंब है। जब तुम्हें मालूम हो गया कि वह अपनी हड्डी पार कर रहा है, तुमसे भी दूर होकर जा रहा है तो कहां जाकर तुम्हारी बुद्धि विकार पर आगे।" प्रभाकर ने पत्नी को यो कोसा।

"समय ही बता सकता है कि कब क्या हो और क्या न हो। गोपालस्वामी के पास जाने की इच्छा आज ही मुझमें जगी। क्या आपने अब तक इसके बारे में कभी सोचा?" प्रभाकर की पत्नी ने वेदांत सुनाया।

पति-पत्नी ने आपस में बातों की और



फिर अपने बेटे को बुलाकर उससे कहा "बेटे, तुम्हारी माँ को हमने कभी अस्वीकार नहीं किया। शादी के बारे में भी हम नहीं चाहते कि तुम्हारे निर्णय को अस्वीकार करें। वाज गोपालस्वामी के घर जाओ। वे तुम्हारे मामा यमान हैं। उनका आशीर्वाद लेना। फिर तुम जैसा चाहते हो, वैसा होगा।" बड़े धार से उन दोनों ने कहा।

सुदर्शन ने माँ-बाप की बात मान ली। वह गोपालस्वामी के घर गया। उसने सुदर्शन से सारी बातें जानी और कहा "तुम्हारी माँ ने अपनी बेटी के मन में दुर्बुद्धि के बीज बोये। ऐसे सौ अवश्य ही अपनी बहू को भी सुखी नहीं देखेंगी। अतः अलग परिवार बसाने का तुम्हारा निर्णय सही है। अब रही, तुम्हारे बाप की बात। वह कैसा आवमी है, गाँववालों



में से किसी से भी पूछें, मालूम हो जायेगा। ऐसे पिता के पुत्र होने हुए भी तुम उत्तम मनुष्य हुए, यह केवल तुम्हारा अकर्मण है। तुम्हारे निर्णय में मैं बहुत खुश हुआ। वृद्धावस्था में तुम जैसे उत्तम व्यक्ति की सेवा पाने की योग्यता नहीं रखता तुम्हारा बाप। इसी कारण भगवान ने तुममें ऐसा निर्णय जगाया।" यों उसने प्रभाव की निंदा की। सुदर्शन ने असहनशील हो कहा "मेरा इससे क्या लेना-देना। आपसे आशीर्वाद पाने मेरे माता-पिता ने मुझे यहाँ भेजा।"

"तुम्हारा बाप यह भी नहीं जानता कि मुसुहूर्त नवा है और कब है। बाद में जाय उसका बहण्यन। कल अन्धश्रु मुहूर्त है। तभी तुम्हें मेरे आशीर्वाद मिलेंगे" गोपालस्वामी ने कहा।

सुदर्शन वहीं से सीधे घर गया। जो हुआ, सब अपने माँ-बाप को बताने के बाद कहा "मेरा अपना व्यक्तित्व है। वही कहेंगा, जो मैं चाहता हूँ, जैसा मैं सोचता हूँ। जो भी हो, मैं अपने माँ-बाप को बहुत चाहता हूँ। मेरी माँ के बारे में गोपालस्वामी ने अंतर्गत कुछ क्वक बिया। मैं चुप रहा। किन्तु मेरे बाप पर कोई

होषारोपण करे, मैं कैसे चुप रह सकता हूँ? ऐसे व्यक्ति से कदापि मैं आशीर्वाद नहीं लूँगा। आगे से मुझसे यह बोझो मत कहिये कि मैं उसके पास जाऊँ और उसका आशीर्वाद पाऊँ। मैं चाहता हूँ कि भविष्य में आप उससे बात ही न करें।" आवेश-भरित होकर उसने अपना निर्णय सुना दिया। अब जाकर प्रभाकर जान गया कि उसके बेटे में पितृभक्ति-भाव कितना भरा पड़ा है। वह यह भी जान गया कि अपनी पितृभक्ति की अशक्तता के कारण ही वह उसकी बातें सुनने तैयार नहीं था। वह यह जान नहीं पाया कि उसकी पितृभक्ति पर उसे प्रसन्न होना चाहिये या दुःखी।

प्रभाव की गोपालस्वामी की बातें याद आयीं। उसकी पत्नी ने अपना स्वभाव सुंधारा। तब से उन दोनों ने वही व सच्चा मार्ग सपनाने का निश्चय किया। इसके कारण उनकी बेटी का परिवार भी शांत व सुखपूर्वक रहने लगा। अब उनकी बेटी के सान-समुद्र को अपनी बहू से कोई शिकायत नहीं।

सुदर्शन की पितृभक्ति स्थावत बनी रही। अब वह पितृभक्ति पिता को संतोष व संतुष्टि दे रहा है।



## अश्वार आशीर्वाद

१४

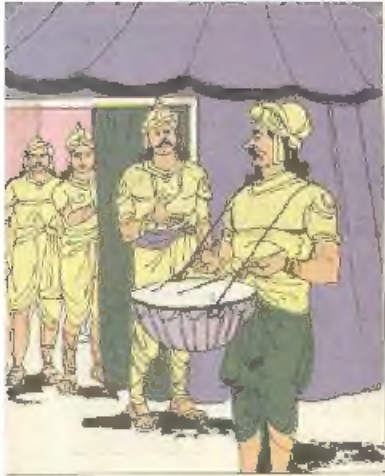
[विदुषार के नरणापराध युवराज अशोक ने श्रेष्ठ आदि आंतरिक शत्रुओं को मरवा जाता। वहाँ की इच्छा के अनुसार द्वितीय विवाह किया। मगध का राजा बना। रानी व शोकशक्त के प्रोत्साहन से कलिंग पर चढ़ाई करने इच्छा हो गया। अशोक ने अरुणक प्रचल किया कि चिरीया देवी उज्जयिनी नगर से राजाजी शत्रुपुत्र लायी जाय, पर वह इस स्थल में अस्फल हो रहा। मगध की सेना कलिंग पर अक्रान्तात् हमला कर बैठी। कलिंग के आसक व प्रजा शत्रुसेना का दडकर युकाबला करने सप्रद हो गये।] - बाद

सहायक अशोक व यश दोनों सेव्यपिपति के पक्ष में सारे। यश ने कहा "हमने कलिंग पर अक्रान्तात् धावा बोल दिया। फिर भी कलिंग की प्रजा दृढ़ चित्त हो हमारा सामना कर रही है। उनका यह साहस व देशभक्ति अति प्रशंसनीय है। यह वही आश्चर्य का विषय है कि इनका कोई राजा नहीं है, जो इनका मार्ग-दर्शन करे। फिर भी ये सब मिल-जुलकर लड़ रहे हैं। अपने प्राण त्यागकर

करने सन्नद्ध हैं। इतिहास में कभी भी ऐसा हुआ नहीं होगा। यद्यपि सामान्य प्रजा युद्ध करना नहीं जानती, परंतु अपने देश के लिए मर-मिटने तैयार होकर आने बड़ रही है। हमें रोकने और अपने देश को शत्रुओं से बचाने के लिए सब कुछ करने तैयार है।"

"अब इस देश का कोई राजा भी नहीं रहा। सामंत व राज-प्रतिनिधि ही शासन-व्यवस्था को संभाल रहे हैं। उनकी एकता हमें





आश्चर्य में डूबो रही है" अशोक ने भी कहा।  
सेनाधिपति मौन ही रहा।

"आप पर दोष मढ़ने के उद्देश्य से मैं यह नहीं कह रहा हूँ। कलिंग की प्रजा का साहस प्रशंसा-योग्य है। मुझे विश्वास ही नहीं हो रहा है कि बिना राजा के प्रजा अपनी जान पर जो खेल भी सकती है" यश ने कहा।

"मुझे भी अति आश्चर्य हो रहा है। वे सामीप्य प्रीति के सामान्य जन हैं। बेटी कपके जीनेवाले साधारण किसान हैं। परंतु इस देश की एक परंपरा है। जब कभी भी देश विपत्तियों से घिर जाता है; जब कभी भी शत्रुओं के आक्रमण के बादल देश पर झंझराने लगते हैं तब ऐसी परिस्थितियों में यहाँ की प्रजा एक होकर उमस सँझती है, अपने देश की रक्षा के लिए अपनी जान भी न्योछावर

करने का दमक हो जाती है। उनकी यह एकता असमान है। उस स्थिति में वह कलिंग की घेना को पूरा सहयोग देती हैं। अपना सहयोग देकर उनके मनोबल को और बढ़ाती हैं" सेनाधिपति ने कहा। "मैंने भी सुना कि देश का हर आदमी अपने देश के लिए प्राण न्योछावर करने सन्नद्ध रहता है। वह किसी भी हालत में पीछे नहीं हटता। अपने कर्तव्य-पालन में वे असमान हैं। क्या यह सच है?" अशोक ने पूछा।

सेनाधिपति ने कहा कि यह सही की सदी सच है। "इसका यह अर्थ हुआ कि बलशाली मगध की सेना का सामना साहसपूर्वक कर ही है, कलिंग की प्रजा और सारनर नहों के किसान। मैंने ठीक ही कहा न? वेखा, मेरे प्रथम आक्रमण में ही मेरी क्या स्थिति हो गयी। क्या परिणाम निकला? हाँ, हम पराजित तो नहीं हुए किन्तु मैं निराश अवश्य हुआ। मेरी आशाओं पर तूषारापात हुआ।" दुस से भरे आग्रह के साथ अशोक ने कहा।

बोझी देरी तक वहाँ गंभीर चुप्पी छायी रही। यश ने हठात् तलवार निकाली और जोश-भरे स्वर में कहा "महाराज, अब तक युद्ध में सौस चलती रहेगी, तब तक ऐसा नहीं होगा।" सेनाधिपति भी थोड़ा मुक़दूर उमने कहा "मगध के दलनायकों तथा सैनिकों को आज्ञा दीजिये कि जो भी सामने आये, बिना सोचे-विचारे मार डाल दिया जाए। यह कोई जरूरी नहीं है कि हम उनके आक्रमण की प्रतीक्षा करें। जब तक वे युद्ध करने संगठित नहीं होते, तब तक हम चुप नहीं बैठेंगे। जितने लोगों को हमारी सेना मार सकती है,

मरने दीजिये। इससे उदका संख्या-बल घट जायेगा और तभी हम उनपर विजय पा सकेंगे। हमारे सैनिक करुणा, दया आदि अपने मन से हटा दें। वे यह न सोचें कि निरुत्थों पर हम तलवार चला रहे हैं। गलतबा का भाव छोड़ा भी हमारे हृदय में जरा जो हम कहीं के न रहेंगे। कलिंग को जीतने की हमारी इच्छा, केवल इच्छा ही बनकर रह जायेगी। यह हमारी युद्ध नीति है और आप इस नीति को अमल में लाइये।"

राजा के पड़ाव के सामने गुनाबी की ध्वनि सुनायी दे रही थी। यह इस बात का संकेत है कि सैनिक राजा की कोई मुख्य विषय ब्रताने वहाँ आये।

यश तौर की तरह बाहर आया और एक दलनायक के साथ अंदर आया।

"ओधाली के किले के परिसर प्रदेशों में धमासान युद्ध हो रहा है। हमारे पाँच हजार सैनिक मारे गये। इससे दो गुना अधिक कलिंग की सेना मारी गयी। परंतु एक आश्चर्यजनक बात यह है कि हमारी सेना का सामना करनेवाले लोग प्रशिक्षित सैनिक नहीं बल्कि साधारण नागरिक हैं, जिन्हें युद्ध करना नहीं आता। अधली सेना तो किले के अंदर ही है।" उस दलनायक ने कहा।

"जसली सेना हम पर दृढ़ गडे, उसके पूर्व ही यथासाध्य हमें बलहान करने का कलिंगों का युद्ध-व्यूह है। अब और बिलंब करना अनुचित है। यह अतर्थादायक भी है। यश, हम ही मगध सेना का नेतृत्व संभालेंगे। आगे बढ़ो" अशोक ने आज्ञा दी।

सभी पड़ाव से बाहर आये।



गुप्तचरों द्वारा मालूम हुआ कि युद्धभूमि के समीप के एक गाँव में हजारों कलिंग स्त्रियों दिन के समय खाना पका रही हैं और सूर्यास्त होते ही सैनिकों को वाद्य-पदार्थ पहुँचा रही हैं। साथ ही साथ वे बायल सैनिकों की चिकित्सा भी कर रही हैं। सेनाधिपति कोल थोड़ी-सी सेना लेकर उस गाँव में गया, जहाँ ये काम हो रहे हैं। वहाँ पहुँचते ही मगध के सैनिकों ने पूरा का पूरा गाँव जला डाला।

बहों की स्त्रियाँ बिचकुल नहीं बरीं। वे जलती लकड़ियों को हाथों में लेकर सेना का सामना करने लगीं। उन्हें वे लंगराला धाजियाँ देती रहीं। वे कहती-बिहारी रहीं "आखिर हमने तोप क्या बिगाड़ा? क्या हमारे देश ने मगध के साथ कभी कोई द्रोह किया? उस देश पर कभी आक्रमण किया? हमारे हरे-





भरे देश को लूटकर अपने देश को संपन्न बनाना चाहते हो ? किसी भी हावत में हम अपने देश को तुम्हारा होने नहीं देंगे। रक्त की नदियाँ बहें, हम सब मीत के घाट उतारे भी जाएँ फिर भी हम तुम्हारे गुनाह नहीं छोड़ेंगे।" परंतु थोड़े ही समय में सैनिकों ने उन सबको नदी निर्दयता से मार डाला।

दिन भर किले के समीप घमासान युद्ध होता रहा। दोनों पक्षों में हज़ारों मारे गये। दूसरे दिन यश ने अशोक के यहाँ जाकर नमस्कार करते हुए कहा "एक शुभ समाचार महाराज। किले की एक तरफ़ की दीवार थोड़ी-सी टूट गयी। मैंने आज्ञा दी कि निपुण सैनिक चुपके से उस बिल से अंदर जाएँ और वहाँ के दलनायकों को मार डालें। दलनायक मार दिये जाएँ तो अवश्य ही किला हमारे

मधीन हो जाएगा। हमारा आक्रमण सफल होगा।"

"मित्र, तुमने बहुत ही अच्छा समाचार सुनाया।" अशोक ने यश को अर्वाइ दो और वड़े ही उत्साह-भरे स्वर में कहा "मैं वहीं ही आतुरता के साथ उस क्षण की प्रतीक्षा कर रहा हूँ, जब कि यह घोषित करेगा कि यश कतिपय देश में मराठ देश का राज-प्रतिनिधि नियुक्त किया गया है।"

यश की भी आनंद की सीमा न रही।

यश की आज्ञा के अनुसार मगध सेनाधिपति ने सेना सहित बाकर लोशाकी किले के समीप राज-प्रतिनिधियों के भवन को घेर लिया। वहाँ कुल डेढ़ीन राज-प्रतिनिधि थे। उनमें से कुछ वृद्ध थे। शत्रुओं का सामना करके उन्होंने अपने प्राण त्याग दिये।

इस घटना के उपरांत यश व अशोक किले के अंदर गये। अशोक को देखते ही रक्त-सिक्त एक वृद्ध ने कहा "यह यश है कि तुमने हमें मरवा डाला। किन्तु हमारी आत्मा और हमारा देशभक्ति का अंत नहीं कर सका। हमारा यह जावेन शाश्वत रूप से बना रहेगा। वह कभी डंका नहीं होगा। जब तक हम तुम सभी का सर्वनाश नहीं करेंगे, जब तक हमारी आत्माएं शांत नहीं होंगी। जिस प्रकार तुम लोगों ने निर्दयतापूर्वक हमारी निराप्युध स्त्रियों को मार डाला, उसी प्रकार निरस्य तुम्हारे स्त्रियों को मारकर ही हम युद्ध की सीस लेगे।" अंदर-भरे स्वर में उस वृद्ध ने प्रतिज्ञा की।

अशोक ने पूछा "किसने निराप्युध तुम्हारी स्त्रियों को मारा?" उन प्रश्न का समाधान

देने के पहले ही वह वृद्ध मर गया।

यश ने कहा "अत्युत्प्रसिद्ध वीरशाली दुर्ग हमारे यश हो ही गया।" अशोक ने आश्चर्य पूर्वक पूछा "दुर्ग तो हमारे यश हो गया किन्तु यहाँ कोई दिखायी नहीं देता।"

"राज-प्रतिनिधियों में से कोई भी जीवित रहा तो हमारा किले में जाना असाध्य हो जाता, अतः सबके सब मार दिये गये। किले की प्रजा में से कुछ मर गये तो कुछ लोग भागल हो गये। कुछ लोग कैद कर लिये गये। वे सब दयानंदों के किनारे भेजे गये।" यश ने कहा।

"इसका यह अर्थ हुआ कि हमने उस दुर्ग को क़ाबू कर लिया, जहाँ कोई मनुष्य नहीं है।" अशोक ने कहा।

"हाँ, यहाँ मनुष्य तो नहीं रहे, किन्तु वे धन-राशिवाँ व निधियाँ हैं, जिन्हें कलिंग के व्यापारियों ने दूर देशों में व्यापार करके कमाकर सुरक्षित रखा। अब कलिंग की लीकाएँ समुद्रों में बल-किर नहीं सकतीं।" यश ने कहा।

"कलिंग के व्यापारों व्यापार रोक भी दें तो हमें इससे क्या लाभ होगा। अगर वे चाहते हैं तो वे हमारे देश के प्रतिनिधि बनकर पथावत दूर देशों में व्यापार चालू रख सकते हैं। क्या वे ऐसा नहीं चाहेंगे?" अशोक ने अपना संदेह व्यक्त किया।

"वे शायद मान भी जाएँ, किन्तु आपके पास अनकर नहीं। स्वतंत्र राज्य के नगरिक होने पर ही वे यह कान केशी" किसी की आवाज़ सुनायी पड़ी।

अशोक ने उस ओर मुड़कर देखा। देखा



कि मृत्यु की शरण में जाता हुआ एक सामंत ये बातें कह रहा था।

"तुम अभी भी जीवित हो?" अशोक के पीछे ही चलते हुए एक दलनायक ने यह कहते हुए उस सामंत के शरीर में खुरी चोक दी। वह सामंत वहीं वहीं मर गया। अशोक ने ताराज हो पूछा "क्यों तुमने तनावश्यक ही उसे मार डाला?"

"प्रभु, अब आप यहाँ हैं तब किसी भी प्रकार की असवधानों बरतनी नहीं चाहिये। उस सामंत की यह हिम्मत कि वह जो मुँह में आया, बक वे। हो सकता है, उसने कोई हथियार अपने पास छिपा भी रखा हो। वह शायद आप पर वह हथियार फेंके और आपको घायल करे।" दलनायक ने अपने समर्थन में यों कहा। सेनाधिपति ने भी दलनायक का





समर्पण किया। "फिर भी आप वह नियम अवश्य ही जानते होंगे कि महाराज की उपस्थिति में उनकी जानकारी के बिना जल्दबाजी में कोई भी काम करना नहीं चाहिये।" यश ने कहा।

"क्षमा कीजिये प्रभू। प्रभु के कल्याण को दुर्घट में रखते हुए मैं यह काम कर बैठा।" दलतायक ने कहा।

अशोक ने यश से कहा "भुले संदेह हो रहा है कि ऐसी अव्यक्त परिस्थितियाँ कहीं हल्के झूठ व झूठ नज्जा हैं।" फिर सेनाधिपति की ओर मुँहकर उभरते पृच्छा "क्या यह सच है कि निराश्रित स्त्रीयों को हमारे सैनिकों ने मौन के धाँध उतारा?"

"यह सच है कि वे निराश्रित थीं। पर वे हमारी शत्रु सेना के लिए आहार-परार्थ पहुँचा

रही थीं और उनके घायल सैनिकों की सेवा-शुश्रूषा कर रही थीं। कलिंग की सेना के आत्म-क्षय को चोट पहुँचाने के उद्देश्य से उनका सर्वनाश आवश्यक हो गया।" सेनाधिपति ने कहा।

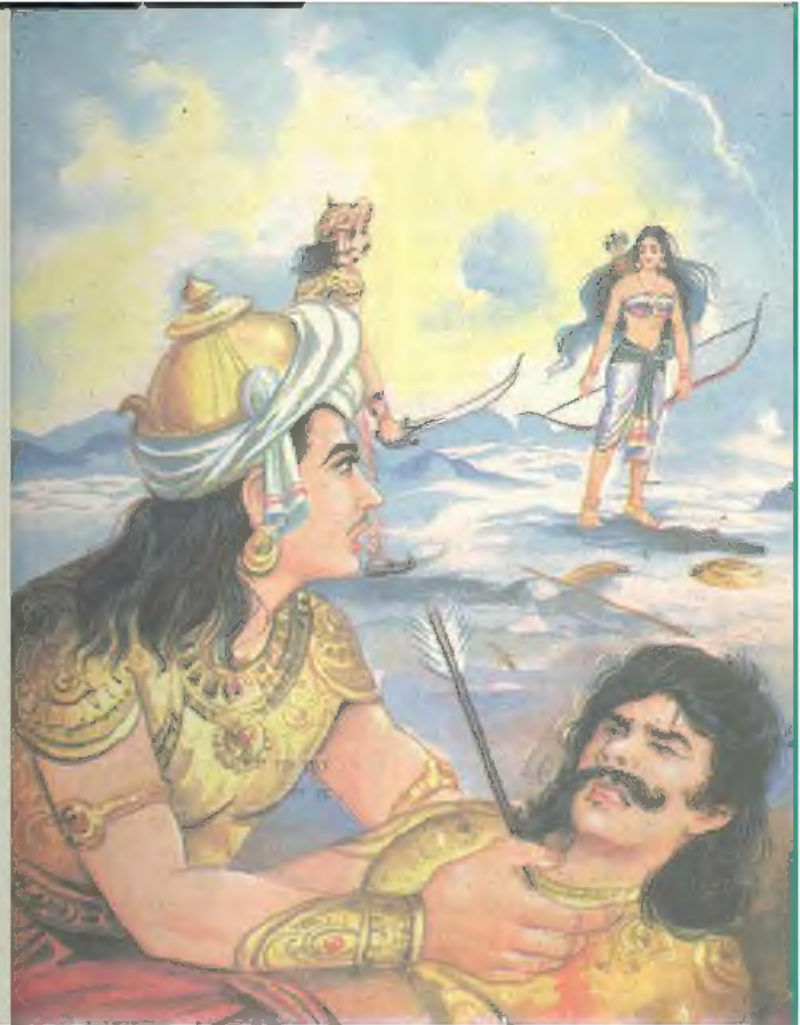
"वे स्त्रियों कहीं रहती थीं?" अशोक ने पूछा। "राज्य के कोने-कोने से आयीं। पास ही के गाँव में इकट्ठी हुई।" सेनाधिपति ने कहा। अशोक ने कहा कि मुझे वहीं ले जाओ। यश और सेनाधिपति अशोक के पीछे-पीछे गये।

किले के बाहर बड़े उपसेनाधिपति ने महाराज अशोक को नमस्कार करके कहा "महाराज, लाख से अधिक कलिंग की प्रजा मर गयी। उससे भी अधिक संख्या में बंदी हुए। लगता है, युद्ध समाप्त हो ही गया।"

अशोक ने मौन धारण किया और थोड़े पर चढ़ बैठा। यश व सेनाधिपति थोड़ों पर बैठकर उसके पीछे-पीछे गये।

अशोक ग्यार की सरहदों पर स्थित उस गाँव के पास आया। ग्राम के चारों ओर सियार, शिद्ध आदि शवों को गोच-नोचकर जा रहे थे। वहाँ के शोकमय वृक्षों ने, उससे भी अधिक फैली चुप्पी ने अशोक के हृदय-भार को और बढ़ा दिया। उसकी समझ में नहीं आ रहा था वह अपनी इस विजय पर गर्व करें या दुःखी हो।

"यश, कलिंग को जीत लिया। अब से तुम्हीं इस राज्य के शासक हो। मैं" अशोक अपनी बात पूरी करे, इसके पहले ही एक स्त्री की हँसी सुनायी पड़ी। दूसरे ही क्षण यश अपनी छाती पकड़ते हुए धौंटे से जमीन पर



गिर पड़ा। उसकी छाती में एक बाण चुस गया। अशोक, सेनाधिपति तुरंत घोड़ों से उतरे। सेनाधिपति ने अंगरक्षकों को आज्ञा दी कि बाण फेंकनेवाला तुरंत पकड़ लिया जाए।

“मुझे ढूँढने की जरूरत नहीं। मैं यहीं उपस्थित हूँ” कहती हुई एक सुंदर स्त्री बाण हाथ में लिये वहाँ आयी। उस समय वह क्रोधित दुर्गा देवी लग रही थी। दलनायक ने उसे पकड़ लिया। अशोक भूमि पर पड़े अपने मित्र के पास गया। यश ने कुछ कहने की कोशिश की, पर कुछ कह न पाया। बाण भर के लिए स्तब्ध अशोक ने अपने को संभाला और उस युवती से पूछा “तुमने इतना बड़ा पाप क्यों किया?”

“अपने पाप छिपाने के लिए मुझपर पाप का दोषारोपण कर रहे हो? मैंने साबित किया कि कलिंग को कोई जीत नहीं सकता। तुम्हारी उपस्थिति में ही मैंने यह भी साबित किया कि तुम किसी और को हमारा शासक बना नहीं सकते। अधिकार-प्राप्ति के लिए हमारी इस भूमि पर जो भी कदम रखेगा, उसका यही ह्रास होगा” उस युवती ने मुड़

स्वर में बताया।

“प्रभु, यह स्त्री क्षमा-योग्य नहीं है। इस पापिन को मारने की जगह मिली दीजिये।” दलनायक ने कहा। “नहीं, अलपति नहीं, ऐसा मत करो। अगर वह चाहती तो बहुत कुछ कर सकती थी। मुझपर बैठा गया बाण अगर महाराज पर बेधती तो हमारा यह आक्रमण निष्प्रयोजक होता; अर्धहीन होता; हमारा ह्रास होती। उसे जीने दीजिये।” यश से कुछ और कहा नहीं जा सका।

सैनिक का लाया पाली यश की पिताने का प्रयत्न किया अशोक ने। परंतु इतने में वह स्वर्गवासी हो गया।

लगता था, हवा रुक पयी। सब कुछ निस्तब्ध हो गया। मित्र की अंतिम बातों को याद करते हुए अशोक अपने मित्र के भौतिक देह के पास बैठ गया। वह होचने लगा “मुझे यह युवती निशाना बनाती तो आक्रमण, यह बरकरार युद्ध, विजय सब निष्प्रयोजक हो जाते। मैंने विजय पायी, किन्तु इससे मुझे क्या मिला, क्या पाया।” वह तीव्र रूप से सोचने लग गया।

(समाप्ति अगले अंक में)



## बुटेरा भैरव

धुत का पक्का विक्रमार्क पुनः पेड़ के पास गया। पेड़ से शव को उतारा और उसे अपने कंधे पर डालकर यथावत् मीन हो भ्रमशान की ओर बहने लगा। तब शव के अंदर के बेताल ने प्रकट होकर कहा, “राजन्, इस आधी रात को निर्भीक बड़े बले जा रहे हो। तुम्हारे शक्ति-सामर्थ्यों को देखकर मुझे बेहद अचरज ही रहा है। शायद इसका कारण हो सकता है, तुम्हारे अचूक न्याय व धर्मबुद्धि जिन्हें तुम अपने शासनकाल में अमल में लाते रहते थे। परंतु कुछ राजा कभी-कभी अपनी तात्कालिक किसी मानसिक अलौकिकता के कारण अब तक अमल में लाये गये न्याय व धर्म-सूत्रों के विरुद्ध भ्रष्ट-भ्रष्ट निर्णय लेते हैं। उदाहरणार्थ मैं हाकू बैरव की कहानी तुम्हें सुनाऊँगा। अपनी थकावट दूर करते हुए ध्यान से सुनो। ‘पूर्व मणिध्वज मंदार देश का शासक था। अपने दैर्घ्य-साहस,

## बैताल-कथा





विवेक तथा त्वायपूर्ण शासन के लिए वह बहुत ही प्रख्यात था। उसके काल में सब मणिज्ज अती त्वायपूर्ण शासन थी। पचड़ गये चोरों के हाथ काट दिये जाते थे। लुटेरे शूनी पर चढ़ाये जाते थे। फिर भी देश में लुटेरों का उपद्रव जारी था।

मंदारदेश तथा पड़ोस के ही साबौर देश के मध्य बहुत बड़ा अरण्य था। उस अरण्य में रहनेवाले डाकुओं की बखल से प्रजा को बहुत ही कष्ट अलग पड़ने थे। मणिज्ज के सैनिकों ने इन डाकुओं को पकड़ने की बहुत बार कोशिश की, पर वे सफल नहीं हो पाये। इसका कारण था-वने जंगल के बीचों बीच स्थित रहस्य स्थान।

मौख उसी जंगल में रहता था वह बहुत बड़ा लुटेरा था। पिता के मरने के बाद,

बचपन में ही वह कुछ लुटेरों का लुटार जाता वह मूर्खाना क नृणा था इस कला मकर भावना था उसे मकर लगे जा, कि काश् धनिक अरण्य मार्ग में जो रता है तो सम्पत्ति मारने पर उसपर पाल पड़ता था और उस लुट लेता था।

एक बार शैरव के अनुयायी एक मुनि को उसके पास से जाये उनका संदेह था कि वह मुनि नहीं, बल्कि बहुहमिय के नेष में छिपा राजा का मुखर है। जब स्पष्ट मालूम हो गया कि वह कोई और नहीं, मुनि श्री है तो शैरव ने तत्कालियों का आदेश दिया कि वह मुनि को अरण्य की दूसरी ओर ले जाओ और छोड़ दो।

किन्तु मान वहाँ से जान नैयाग नहीं था उसने कहा "बेटे, मैं जानबूझकर इस घन जंगल से गुजर रहा था। मैं एक पत्थक पंग-साधना में हूँ। उसके लिए एकाग्रता निरंतर आवश्यक है। मैं जब त्याग मग्न रहता हूँ तब किसी की मुझसे जान करनी नहीं चाहिये।

किन्तु इसके पहले जब कभी भी मैं योग-मुद्रा में बैठ जाता था, मुलाक्षित मुझे दखन का जाते थे और प्रश्न पूछ कर मेरा ध्यान भंग कर देते थे मेरी एकाग्रता बिखर जाती थी क्या तुम मेरे लिए कोई ऐसा प्रबंध कर सकते हो, जिससे कुछ समय तक इस रतय स्थान में ध्यान मग्न होकर रह सकूँ।"

शैरव ने मुनि की इच्छा स्वीकार कर ली मुनि के लिए आवश्यक प्रबंध मिले और उसनी आवश्यकताओं की पूर्ति स्वयं करने लगा इससे मुनि की तपस्या निर्विघ्न चलने लगी।

एक दिन साधु ने शैरव को बुलाकर कहा "पुत्र, गर्मी का मौसम आ गया। मुझे अब हिमालय पर्वतों पर जाना है, मैं तुम्हारी सेवा श्रुक्षा से बहुत प्रसन्न हूँ किन्तु मुझे कुछ पहुँचाती है तुम्हारी यह वृत्ति। क्या तुम नहीं जानते कि पराये लोगों की संपत्ति को लूटना पाप है? पेट भरने के लिए और कितने ही मार्ग हैं। बहुत ही हीन, निष्कृत इस जीवन मार्ग को छोड़ दो।" उसने यों हितबोध किया।

शैरव ने जवाब दिया "स्वामी मुझ जैसे आदमी को कैसे मालूम होगा कि पुण्य क्या है और पाप क्या है? हमारे दादा परदादाओं से हमारा यही पेशा है। मैं नहीं जानता कि वे क्यों और कैसे लुटेरे हुए। मैं तो केवल तलवार से लड़ सकता हूँ। कोई और विद्या में मैं अपरिचित हूँ। क्या राजा मुझे अपना सैनिक बनावेगे नहीं? उन्हें तो पकड़े गये चोरों का सजा देना मात्र मालूम है अपने को सुधारने के बारे में वे सोचते तक नहीं।"

मुनि ने शैरव से सुधार जाने का तीव्र प्रयत्न किया। उस प्रयत्न में वह विफल हो रहा उसने शैरव से कहा "बेटे, जो मुझे सही लगा, मैंने तुम्हें बताया। अब तुम्हारी इच्छा। तुमने मेरी बड़ी सेवाएँ की, अतः मैं प्रत्युत्कार करना चाहता हूँ। तुम्हें एक मंत्र बताऊँगा, जिस में जानता हूँ उसका अप करते हो तुम शिशु बन जाओगे। अपना जीवन पुन, अन्य-काल से शुरू करोगे परंतु हाँ, फिर से तुम शैरव नहीं बन सकोगे मह बात अच्छी तरह से याद रखो और आवश्यकता पड़ने पर यह मंत्र जगो।" यों कहकर मुनि



ने शैरव को मंत्र बताया।

एक बार सावीर देश को धन की सहायता की जरूरत पड़ी। मंदार देश के राजा मणिज्ज ने लूटे व चुस्त सैनिकों को धन सौंपा और दलपति के नेतृत्व में उन्हें सावीर देश भेजा। किन्तु वह धन सावीर देश नहीं पहुँचा पता नहीं चला कि दलपति व सैनिकों पर क्या गुजरा मणिज्ज का लगा कि यह काम अवश्य हो अरण्य के लुटेरों का ही काम है। बड़ी सेना लेकर मणिज्ज स्वयं निकला और रहस्य स्पावकों को धर लिया, शैरव भी पकड़ा गया राजा ने जब उससे धन व सैनिकों के बारे में पूछा तो उसने कहा कि मैं इस बात को कुछ नहीं जानता। पर उसने यह नहीं कहा कि मैं लुटेरा नहीं हूँ।

मणिज्ज ने उसकी बातों का विश्वास



किया या नहीं, वह प्रकट नहीं किया पर उसे फौदारी की सज़ा सुनायी क्योंकि वह अरण्य में पकड़ा गया, जो लुटेरों का निवास-स्थल है। एक सप्ताह के अंदर राजा की आज्ञा अमल में लायी जायेगी। वह जेल में डाला गया। भैरव अपनी दुस्मिती पर बहुत ही चिंतित होने लगा। उस समय उसे मुनि के बताये मंत्र की राद आयी।

सर्परे-मन्त्रों जेल का अधिपति तैरिन्जनों सहित आया और दरवाजे खोले। सोने के ताल को खोलने के लिए जब दुपट्टा हटाया गया तो उनके आश्चर्य की सीमा न रही। उस दुपट्टे के नीचे एक शिशु पाया गया। दरवाजे जैसे के तैने बंद थे। किसी के अंदर आने की कोई गुंजाइश नहीं थी। बाहर जाने का कोई दूसरा मार्ग भी नहीं था। अधिपति ने शिशु को

अपने हाथ में लिया और गौर से देखा। उस शिशु के गाल पर एक दाग साफ दिखाने दे रहा था। उसे यह आया कि भैरव के गाल पर भी तलवार का गंठ था। उस शिशु के चेहरे पर भैरव की एकरूपता थी।

इसमें कोई संदेह नहीं कि भैरव शिशु के रूप में परिवर्तित हुआ। राजा की आज्ञा भैरव के गले में फौदों का फंदा डालने की थी। उसकी जगह पर यहाँ तो शिशु है, इसका क्या किया जाए। अधिपति निर्णय नहीं कर पाया। वह पशोपेश में पड़ गया।

राजा मणिध्वज भरे दरबार में आसीन था। तब शिशु को लेकर जेल का अधिपति वहाँ पहुँचा। उसने जाँ हुआ, जो देखा, सब कुछ बताया। मणिध्वज ने सभासदों की राय पूछी।

तब सुप्रसिद्ध त्वाणारी प्रसादगुप्त ने कहा "महाराज, निस्संदेह ही यह शिशु लुटेरा भैरव ही है। क्या कोई अब तक संदाग देश के दुर्भेद्य कारागार से बचकर निकल पाया? भैरव मंत्र-तंत्रों के आधार पर दंड से मुक्त होने के प्रयत्न कर रहा है। जब उस तंत्र मिल जायेगी, अवश्य ही फिर से लुटेरा भैरव बनेगा। आपने जो दंड उसे दिया, बिना किसी हिचकिचाहट के अमल में लाइये। उसे शूरी पर चढ़ाइये, आपने इस पर क्या करके इसे छोड़ दिया तो ग्रन्थि में अपराधी ऐसा ही मंत्र-तंत्रों के बल पर छूट जायेगी। ऐसे ये अपराधी देश के लिए खतरा साबित होंगे। इस शिशु को छोड़ देने का मतलब है, हम अपनी दंड-संहिता को स्वयं लात मार रहे हैं, उसकी हमी उड़ा रहे हैं। आप इस शिशु पर

थोड़ी सी भी दया न दिखाइयेगा। फाँसी की इसकी सज़ा अमल में लाइयेगा।"

मणिध्वज थोड़ी देर तक मौन हो सोचता रहा और फिर घोषित किया "इस शिशु को कोई दंड दिया नहीं जायेगा।" उसने यह भी घोषणा की कि यह शिशु अंत पुर में पलंग।

बैताल ने यह कहानी सुनाने के बाद राजा विक्रमार्क से कहा "राजन्, मणिध्वज के त्याग-निर्णय के बारे में मुझे अनेकों संदेह हैं। यह तो सर्वसम्मति से मान लिया गया कि वह शिशु कोई और नहीं, स्वयं भैरव ही है। रूप के परिवर्तन मान से क्या कोई लुटेरा दंड के योग्य नहीं? अनायास इसके राजा ने इस शिशु को अपने अंत पुर में शरण न। इसका यही मतलब हुआ कि एक लुटेरे को राजसत्कार भी मिल गया। शिशु पर राजा के हृदय में भी करुणा जगी, क्या उससे राजा अपना कर्तव्य भी मूल गया? दंड संहिता को भुला दिया? भरे इत संदेहों के समाधान जानते हुए भी तुम चुप रह जाओगे तो तुम्हारे सिर पर क्या टूटने हो जायेगा।

विक्रमार्क ने कहा "मणिध्वज का न्याय निर्णय सही है और नया तुला है। शिशु के रूप में जो भैरव है, वह निरपराधी है। भैरव ने कहा भी कि दसपति द्वारा भेजे गये घात को मैंने नहीं लूटा। उसके रहस्य स्थावर पर वह घात पाया भी नहीं गया। राजा जान गया होगा कि भैरव झूठ नहीं बोल रहा है, अतः उस विषय में उसे दंड दिवा जाना नहीं चाहिये। जैसे ही भैरव शिशु के रूप में परिवर्तित हुआ, वैसे ही अपने पाप भरे जीवन को त्याग दिया और नये जीवन का शुभारंभ किया। मंत्र का उपयोग वेनेवाने मणि का भी पहा उद्देश्य था कि ग्रन्थि में वह मन्त्रार्थ पर चले। शिशु के रूप में परिवर्तित भैरव ने समझो नया जन्म ही लिया। उसे नौते जीवन की याद नहीं जाती। इसलिए इसमें कोई संदेह नहीं कि मणिध्वज का सुनाना न्याय निर्णय बिज्जुन न्याय सम्मत है।"

राजा का यों मौन भंग होते ही बैताल शव सहित अदृश्य हो गया और पेड़ पर जा बैठा।

आधार: अनादी प्रसाद की रचना







## पिता की भेंट

चन्दन नामक गाँव में भारत नामक एक किसान रहता था। पाँच पक्कड़ की उसकी उपजाऊ भूमि थी। वह और उसका बेटा चंदन मन जगाकर बेती करते थे। बेटा पिता की मदद करता था। एक साल इन्हें बाल की अच्छी फसल हुई। भरत ने बाल की देखभाल के लिए एक आदमी को रखा। वह चाहता था कि अच्छा काम मिलने पर बाल को बेचे।

दो हफ्तों के बाद हिमाचल देखा तो मालूम हुआ कि दो बोरे कम पड़े। भरत ने रखवाने से पूछा तो उसने बताया कि रात भर में जागा रहा। बाल भी मैंने अखिरे बंद नहीं की। भरत ने उसकी बात का विश्वास नहीं किया। अपने बेटे चंदन को स्वयं वहीं रहने का आदेश दिया।

उस रात को भी एक बरि की कमी पड़ गयी। भरत से रहा नहीं गया। उसने

गाँववालों से पूछा तो मालूम हुआ कि चंदन ही हर रोज अछड़ बाल का एक बोरा दुकान में बेच रहा है।

भरत को विश्वास नहीं हुआ। वह सोच भी नहीं सकता था कि उसका बेटा ही ऐसा काम करेगा। जब वह सोच में पड़ गया कि क्या किया जाए तब पड़ोस के गाँव से उसके मित्रदेव का नौकर वीर उसके घर आया। वह अपने मालिक के काम पर वहाँ आया था।

भरत ने उसकी पूरी बात सुनने के बाद उससे कहा "देवो, तुम्हारे मालिक का काम कोई जल्द्वारी नहीं है। बार पाँच दिन यहाँ रह जाओ। हमें चोर का पकड़ना है, जो बाल की चोरी कर रहा है।"

उस रात को भरत ने वीर को बेत में रखे की कहा। वह जब सबने यहाँ आया तो देखा कि एक और बोरा गायब है। तभी जागे

वीर से उसने कहा "क्या समझ रहा? यहाँ आकर देखा तो पाँवों के निशान देखने पर स्पष्ट है कि यह काम किसी एक ही चोर का है। किसी एक को अकेले ही उस बजानदार बोरे को उठाना और ले जाना ना मुमकिन है। तुमने बोरा उठाने में उस चोर की अकस्य ही मदद की होगी।"

वीर ने फिर सुकन्कर जमीन देखते हुए कहा "मालिक, मैं कुछ नहीं जानता। शक गया और सो गया। अभी अभी जाग रहा हूँ।"

'बेत में एक ही शाय है, यह पाँवों के निशानों से साफ मालूम हो रहा है। तुम्हारी मदद के बिना कोई अकेले ही बोरा उठाकर ले जा नहीं सकता, सब बोले।' भरत ने वीर से कड़े स्वर में पूछा

"आप क्यों एतबार नहीं करते कि मैं कुछ नहीं जानता।" वीर ने मुड़कर चंदन को देखा जो बैठा तो मानी पिता रहा था। फिर कहा "अपने बेटे से ही पूछ लीजिये कि बोरा कौन उठा ले गया?"

भरत ने कण्ठवे स्वर में अपने बेटे से पूछा "बोल, किसने बोरा उठाकर ले जाने में तुम्हारी मदद की? सब बोल।"

चंदन को मालूम हो गया कि बाँदा फूट गया तो उसने भरभराते हुए कहा "किती न मेरी मदद नहीं की। मैंने चुप उठा लिया।"

उसके इस जवान से भरत चकित हो गया। क्योंकि दो बजानदार आदमियों के होने पर ही उइस का भारी बोरा उठाया जा सकता है। उसे नीचे से अकेले ही उठाना संभव नहीं है। जागे गये सो गये, अब वह यह जानते



आतुर था कि उठाने में किसने उसके बेटे की मदद की।

"तुम्हारा कहना है कि अकेले हो तुम बोरा उठाकर ले गये। ज़रा मेरी आँखों के सामने यह काम करके दिखाता।" भरत ने कहा।

चंदन ने उइस का एक बोरा खड़ा किया। उसे अपना पीठ से मटाया। अपने दाता हाथों को कंधों में होते हुए पीछे ले गया और बोरे को कसकर पकड़ लिया। फिर एकदम उठ खड़ा हो गया। बोरा पीठ पर झोले हुए वहीं दो तीन चक्कर लगाया और पिता के सामने आकर खड़ा हो गया।

भरत अखिरे फैलाकर अपने बेटे का देखाता रहा, फिर कहा "चंदन, जा बोरा दुकान में बेच ले।"

चंदन फिर सुकाना पड़ा। घर चंदन लगा। इस बार भरत ने बड़े ही ध्यान से अपने बेटे की पीठ को धपधपाते हुए कहा "मैं सच कह रहा हूँ। तुमने अपने असाधारण बल का प्रदर्शन किया, भरी तरफ से यह छोटी गैट स्वीकार करो।"

चंदन वहाँ से खुशी-खुशी चला गया। भरत ने बीर से कहा "अरे बीर, देखा न, अब वहाँ क्या हुआ।"

मुस्कुराते हुए बीर ने कहा "मालिक यहाँ जो हुआ, यही नहीं बल्कि गलत को जो हुआ, वह भी देख चुका।"

"अच्छा तो तुमने बूढ़ क्यों कहा कि मैंने कुछ नहीं देखा, मैं कुछ नहीं जानता।"

भरत ने पूछा

बीर ने कहा "मालिक, आपके बेटे ने जो चोरी की, वह मुझे चोरी नहीं लगती। मैं तो सुना कि आपका बेटा बहुत ही मेहनती है? काम से कभी बुरा नहीं भ्रमता।"

भरत ने कहा "कौन कहता है कि वह मेहनती नहीं है। सदेर-सदेर जाग जाता था, जाग देता था, बँकों को जाग खिलाता था, खेत जाकर हरी घास न खाता था, दिन में

फिर से खेत जाकर बँहों को काम काज बाँटता ही सुचारु रूप से करता था। काम पूरा होने के बाद घर लौटना था। काम करने से वह कभी भी पीछे हटता नहीं था। मुझे तो इस बात का दुःख है कि ऐसे मेहनती पुत्र को क्यों ये चोरी करने पड़ी। यह कैसे उसकी आदत बन गयी। इससे का मुझे खेद है।"

बीर ने कहा "इस छोटी सी बात पर आप इतना दुःखी क्यों होते हैं। ऐसा अच्छा लड़का कैसे चोर बन गया, आप बूढ़ सचिंयता। बड़ा अब बड़े हो जाते हैं, उन्हें पैसों की जरूरत पड़ती है, तबक अपने धर्म होते हैं। बड़े उनकी आवश्यकताओं की ओर ध्यान नहीं देते तो वे चोर बन जाते हैं। मैं नहीं कहता कि चोरी अपराध नहीं है। पर वे चोरी करने पर क्यों तुल गये, हमपर सौच-विचार करना वहाँ का फल है। यह अच्छा हुआ कि उसने पतापों का भ्रम नहीं चुपचा। भ्रम ऐसा करना तो आपका किना भ्रम मान होता।"

भरत को अब मालूम हुआ कि उनसे क्या गलती की। उसके बाद चंदन को चोरी करने की जरूरत ही नहीं पड़ी।

## कावेरी-यात्रा - I

### प्रारंभ

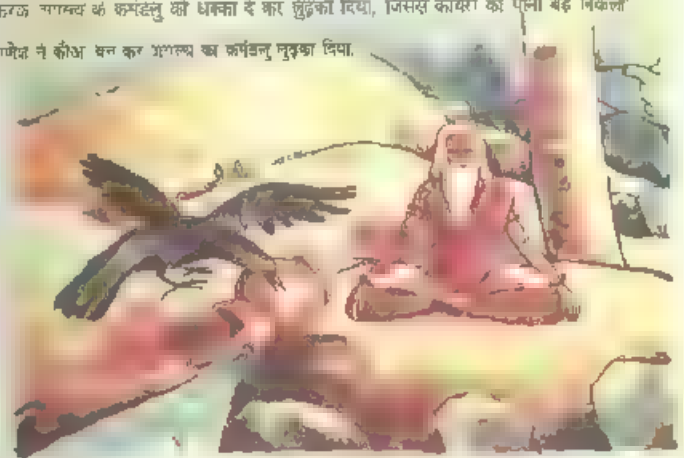
वर्णन - जयंती महर्षिणम् चित्त गोपकुमार

कावेरी भारत की उन सात पुण्यनदियों में से है जिन्हें धार्मिक हिंदू प्रतिदिन स्नान के समय याद करते हैं। कावेरी के दूसरे भी कई नाम हैं - दक्षिणगंगा, पोनी (स्वर्णपानी), अखंडा, अन्नपूर्णा। यह 765 किमी लंबी है और कर्नाटक तथा तमिलनाडु की प्राणधारा है। बरत का भी कुछ पानी उसमें आकर मिलता है।

### पुराणों में कावेरी

कावेरी के जन्म के संबंध में पुराणों में कई कथाएँ हैं। स्कंदपुराण के अनुसार, कावेरी पड़ने शिवजी के निवास कैलाश पर्वत पर बहती थी। शिवजी ने उसे आहवा दी कि यह विष अमृत के कर्मदंतु से रहा करो, जिससे वे जल भी जाएँ उन्हें पानी की कमी न रहे। बाद में महर्षि अगस्त्य विंध्य पर्वत को लंघन कर दक्षिण भारत चले आये। उस समय दक्षिण में भयंकर सूखा पड़ा हुआ था। क्योंकि एक असुर पानी-भर दादलों को रोकें हुए था। ईश्वर के कहने पर भगेश ने कीर्ण का रूप धारण करके अगस्त्य के कर्मदंतु को धक्का दे कर छुड़का दिया, जिससे कावेरी का पानी बह निकला।

भगेश ने कीर्ण धन कर अगस्त्य का कर्मदंतु मुक्त किया।













ने होगा। दोनों एक दूसरे को चाहते भी हैं।

अन्त में स्वामिजी दे दी तो एक सप्ताह के अंदर ही उनका विवाह संपन्न हुआ। बाणी, अन्त की धर्मपत्नी हो गयी। अह अर्पणो पत्नी को लेकर परिवार बसाने शहर चला गया। उसने एक छोटा सा घर किराये पर लिया। उसमें एक कमरा और छोटा सा रसोई घर मात्र थे। किन्तु, जो घर उनके रहने के लिए अब तक फाटो था, अब दोसरे प्राणी के हा जाने से काम पड़ गया, अब उनका एक पुत्र हुआ। अब वे बाणी बड़ा घर लेने के लिए अन्त घर टबाख डालने लगे।

“हमारी आमदनी कम है। बड़ा घर लेगे तो मुश्किल प पड़ जायेगी। तुम तो जानती ही हो कि किराया ज्यादा देना पड़ेगा।” अन्त ने बाणी का समझाने की कोशिश की।

बाणी ने तुरंत प्रस्ताव रखा ‘मम क्या न अपना घर बना लें?’

अन्त हक्का बक्का रह गया। उसने कहा ‘‘क्यों ऐसी बेकार बातें कर रहे हो। हम मात्रा कैसे अपना घर बनाया करते हैं। अपना बेसना छोड़ दो’’।

फिर भी बाणी अपने पयाना में लगी हो रही। उसने त्रिफायल करती और बाणी ने रकम जमा कर ली। कुछ महिना के बाद उसने अपने पति से यह ज्ञान अनाया

अन्त हम पढ़ा और कहा ‘‘इस रकम में तो इन घर के अमान भी नहीं पड़ेंगे।

इतने रकम हमारा पाम थाड हा है कि हम इस पंडर घर में अन्त के घर बनवा लें।

प्राण अन्त जित पर रहा है। अन्त ने एक बच्ची के माँ बाप हुए। बाणी ने फिर से अपना घर बनवाने पर जोर दिया। अन्त ने यह कहकर साथ, मरु इतकर कर दिया कि यह हमारे बस की बात नहीं है।

असौदार ने अपने महा काम करनेवाले सब कामन्तिया व निग शहर के बाहर अमन खण्ड और मृगत हो। तमें और दी अन्त का भा ख’ मा गज कर अमान मजाने

बाणी ने तुरंत अपने अमान के और कर हुए कहा ‘‘अब ही सही अपना घर घर बनवा लेना नितान आवश्यक है। बच्चे जैसे जैसे बढ़ते जायेंगे, उनकी अन्त के घर में बाँ बढती जायेंगी। उस स्थिति में एक लक्षान हमारे लिए बहुत ही कठिन हो जायगा।

अन्त ने फिर से उसके अन्तहा पर उठ

अन्त ने फिर से उसके अन्तहा पर उठ

अन्त ने फिर से उसके अन्तहा पर उठ

अन्त ने फिर से उसके अन्तहा पर उठ

अन्त ने फिर से उसके अन्तहा पर उठ

पानी डेल दिया। उसने कहा ‘‘घर बनवाना चाई बन नहीं है। तकड़ी खरीदनी होगी ई चूना आदि बहुत चीजें खरीदनी होंगी। अन्त ने भी अपना मेहनताना बहुत बड़ा दिया। हम बसे साधारण मनुष्य इस महंगाई के अन्त में लोपड़ी भी बनवाने की शक्ति नहीं रखते।

बाणी त्रिभिला रही। उसने सोचा अन्त में कड़ा तुम तो तुप वेद रहन ही। जो दिवस में कोई फयल ही नहीं काने। पहले तथान पाम जो शक्य है, उसमें दीवारें खड़ी करगे। फिर तकड़ी और छत के बारे में मचेंगे। जैसे शा ही, अपना एक घर बनवा लेगा। अन्त तो कर। चूध वेद रहने में पछ नहीं हो।

अन्त बिना उत्तर दिये जीवन चला गया। बाणी ने जो गजब जग की, मि

मजदूर को बुलाकर उनसे बात की। असौदार ने जो कहा दी, उसमें नीचे खुदवायी अन्त गना करता रहा, पर अब वह जान गया कि वह अपनी बात सुनेवाली नहीं है तो चुप रह गया।

देवने-देखते दीवारें भी खड़ी कर दी गयी। बाणी ने इस बाब गाव में रहनेवाले अन्त पंड के लख भिगत। उनके भई ने अपने घर में जो पड़ थे मरवाये और तकड़ी बनाया। पों बाणी ने प्रपणो मन्तने तान फूँकी

बाणी ने जो रकम जमा की पूरी की पूरा बनवा हो गयी। अहोस पक्षोमवालों से अन्त कर्ज भी लिया। अब छत का काम



मान जानी रह गया।

इस स्थिति में, एक दिन अन्त अब भोजन करके विश्राम का उपक्रम कर रहा था तब बाणी ने उससे कहा ‘‘तुम्हारा कोई बौद्ध कर्ज देगा तो, क्यों नहीं ले लेते? छत पूरी हो जाए तो ममज लो कि घर बन ही गया। अब हमें बागहोपे बॉस और खपरेल। अब घर बना हो लिया तो ताल-पत्तों से ठुफता क्या अच्छा लगेगा?’’

अन्त चिसियाता हुआ बोला ‘‘क्या कभी मैंने किसी के सामने हाथ पसारें? घर न भी हो तो चलेंगा, पर अपना आन पर और नहीं आने दूँगा।

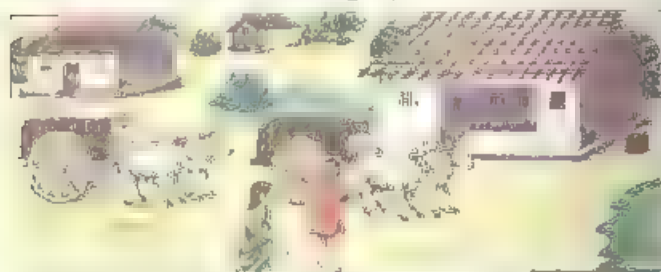
इस घटना के दो दिनों के बाद गाँव से बाणी की एक सहेली उसके घर आयी। उसने विषय जना और कहा ‘‘तुम्हें तो पहले ही

मुझे सूचित करना था। हमारे सेतो में राह के मजबूत पेड़ हैं। छत के लिए जो लकड़ी चाहिये, मैं फ्रीस भेजूंगी। अधीर न होना।”

यों सहेला की भिजवायी लकड़ी से छत बनी। अब सपरेल गान बालिबे। शहर के खरैरों के एक कारखाने के बारे में पूछताछ करके उसके लसमेंधी पूरी जानकारी पायी। उसे यह भी मालूम हुआ कि उस कारखाने का मालिक पैस भरने पर कितने में सपरेल लेवता है। पर उसकी एक शर्त थी। कोई मध्यस्थ हमी दे, तभी वह सपरेल बचेगा।

वाणी गंभीर सोच में पड़ गयी कि कौन है, जो हमी देगा। अनंत बुपबुप यह सब कुछ दखता ही रहता। सबरे सबरे जब वाणी सिट्टी की पास बैठकर अपने कैशों में संखी धला रही थी तब उसने दखा कि सपरेलो में भरी तैल गाड़ियां उसी के घर की तरफ जा रही हैं तो उसके आश्चर्य की सीमा न रही। बैलगाड़ियों के साथ-साथ अनंत भी चला आ रहा था। वह दीदी दीदी घर के बाहर आयी।

मुस्कराते हुए अनंत ने वाणी को देखा जो कहा “इतनी क्यों चकित हो रही हो?”



यों पूरे सपरेल हमारे घर की छत को लगा ही ले जाया है। तुमने साबित किया कि वयल कर ही मनुष्य के लिए कोई भी कार्य शक्य नहीं है, अब ही सही, मैं छप पर हाथ धन चुप बैठा रहूँ तो यह बहुत ही ज्यादा होगी, तुम्हारे भाग्य बन्वाय होगा। बेटी से ही सही अपना कर्तव्य जान गया।”

वह पति में बहुत समय से इसी प्रकार के परिवर्तन की प्रतीक्षा कर रही थी। अब परिवर्तित पति को देखकर उसके आगद का सीमाए न रहीं। उसने कहा “अपना घर बनाने में पहले से ही तुम्हारा सहयोग मशपास हुआ होता तो हम किराये के घर में रहने की दुस्स्थिति से बच जाते।”

“जो भी हो, तुमने ही किराये के घर में रहने की दुस्स्थिति से मुझे बचा लिया। अब मेरी समझ में जा गया कि पति की कमाई का कुत्तयाग न करने में कितना बिलवारी न गजबगी बूझवारी, वह समाध्य कार्य भी साध्य कर सकते हैं।” अनंत ने कहा।

“हाँ, हम जिस स्थिति में हैं, उसमें इतना मात्र कर पाना असमध्य कार्य ही है।” कहती हुई वह जोर से हँस पड़ी।

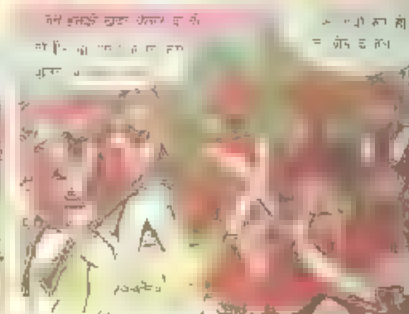
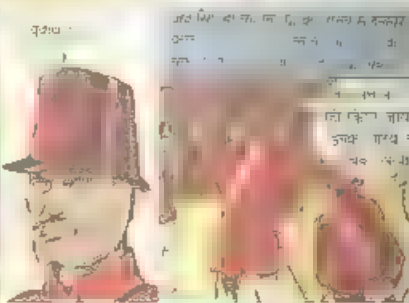
3 अंग्रेजों ने लड़े भिड़ 6

## बल्लू का विद्रोह

बर्तान पीपुल द्वारा • चित्र श्री जी राम













चोटी सी अवोध भाव । अगर ऐसा हो ती  
ममता के लहरों में डूब जाऊँगी मैं ।  
वृत्तमयि में देवताओं से कहा

जब मैंने सुना कि तुम्हारे लहरे  
काल गुलाबी लहरों में रंगित हो  
कर लहरों में डूब जाऊँगी मैं ।  
ममता के लहरों में डूब जाऊँगी मैं ।  
ममता के लहरों में डूब जाऊँगी मैं ।  
ममता के लहरों में डूब जाऊँगी मैं ।  
ममता के लहरों में डूब जाऊँगी मैं ।  
ममता के लहरों में डूब जाऊँगी मैं ।

ममता के लहरों में डूब जाऊँगी मैं ।  
ममता के लहरों में डूब जाऊँगी मैं ।  
ममता के लहरों में डूब जाऊँगी मैं ।

जा सकता है और यह टपाय तुम्हारे हाथ में  
है । वह तुम्हें चाहता है, अतः तुम उससे  
कहो कि कविगण उसे पानकी में बिठकर  
तुम्हारे घर ले आये । जब वह कविगण से यह  
कार्य करायेंगा तब तुम्हें का पान में ही  
धूप होने लगेगा । पुत्र से भवकथा में

हम अचानक से वृद्ध हो गए हैं । हमें  
यह कहना है कि हमें तुम्हारे हाथों में  
अनुसार कविगण से पानकी में बिठकर  
होना है । जबकि यह मैं गुण और कवि  
विमं नैतिक विषय को लेकर उसमें वाद  
विवाद करते हैं । तब हमें एक इस व्यवहार  
में बाधित हो रहा है और कोष में शक्ति परस्पर  
के लिए पर लात मारी । अगस्त्य ने उसे सर्प  
बल जाने का शपथ दिया । इससे तुम्हें स्वर्ग-  
ब्रह्म हो गया । इंद्र पुनः अपना पद पाने में  
असमर्थ होया और शर्मावस्था के साथ तुम्हें  
जीवन बिताने लगा

अतः तब धर्मराज को यह कथा मलाई  
और दुरोधन से मिलते बता गया ।  
द्वपद का पुरोहित गंडाओं का दण्ड ब्रह्मकर्म  
हस्तिनापुर पहुँचे, उसके पहलू से पांडव  
सौम्य के पक्ष में युद्ध करनेवाले राजा और  
उनकी संतानों उन-उनकी बाबियों में पहुँच  
गयीं

राजवाले अतः युद्ध करने के लिए  
अश्वीहर्षा सेनाओं को पलायन में पहुँच गयीं ।  
पलायन का दुःखान भोग मात्र एक अश्वीहर्षा  
सेना से गयी । चौदह का राजा धृष्टकेतु और  
इतर ही मरुता मरुता से आये । पांडव देश  
का राज पवन प्रवेश्य योद्धाओं के साथ

धर्मराज की सहायता करने आ गया । द्वपद  
अनेकों देशों के योद्धाओं और महारथी अपने  
पुत्रा को साथ लेकर सभा में बैठे । तब  
महर्षि देश का राजा विराट और जन सेनाओं  
को अपने साथ ले आया । उनके अलावा कितने  
ही देश के राजा अपने-अपने हाथों के साथ  
यौवक से युद्ध करने आ पहुँचे । इसी समय  
पर दुरोधन के पक्ष में पांडवों से युद्ध करने  
के लिए गगारद अश्वीहर्षा सेनाओं इकट्ठिन  
हुई । तबराज का पुत्र सगदल किरातो से  
अग्रे एक अश्वीहर्षा सेना-सहित दुरोधन के  
पक्ष आया । यह सेना यदि अश्वीहर्षा सेना  
या अश्वीहर्षा सेना की एक-एक अश्वीहर्षा  
सेना साथ ले आये । पत्नी और कूलों को  
बिलाकर ऐसे गये पुष्पहर्षा को पहलकर हाथी  
जैसे दूध योद्धाओं को लेकर कुतवर्मा आ  
पहुँचा । विष्णु, मापीर देशों से जयप्रद (संध्य)  
आदि कला से राजा दुरोधन के पास भव्य  
संज्ञा के माहिष्मतीपुर में नील भयंकर  
जयधो में लैम अश्वीहर्षा सेनाओं के अपने  
साथ ले आये । अश्वीहर्षा देश का राजा अपने  
हाथ ले आये । अश्वीहर्षा सेना से आये । अश्वीहर्षा  
अलावा अन्य देशों से आये । अश्वीहर्षा की संज्ञा  
कुल धर्मराज सेना अश्वीहर्षा होय

दुरोधन के पक्ष में युद्ध करने आये देशों  
से आये राजाओं के रहने के लिए हस्तिनापुर  
में अगह नहीं गयीं । सेनाओं का कथ कह  
इतना बड़ा सभा के रहने के लिए सैन्य सेना  
प्रत्यक्ष किया । अश्वीहर्षा, गुरुराज सेनाओं  
कोपण मरुभूमि अश्वीहर्षा कालकूट  
राजा के वरुण सेनाओं से अश्वीहर्षा  
युष्मानवट अश्वीहर्षा में गयी उनके लिए



डेरे जड़े किये गये ।

इस विषय पर राजा का सोच-समझ  
सेनाओं को देखना हुआ द्वपद का पुरोहित  
हस्तिनापुर पहुँचा । वह सेनाओं के साथ  
अपने से आया । अश्वीहर्षा सेनाओं से आये ।  
उस युद्ध दुरोधन का सैन्य सेना से आये ।  
अश्वीहर्षा का युद्ध दुरोधन का सैन्य सेना से आये ।  
अश्वीहर्षा का युद्ध दुरोधन का सैन्य सेना से आये ।  
अश्वीहर्षा का युद्ध दुरोधन का सैन्य सेना से आये ।  
अश्वीहर्षा का युद्ध दुरोधन का सैन्य सेना से आये ।

अश्वीहर्षा का युद्ध दुरोधन का सैन्य सेना से आये ।  
अश्वीहर्षा का युद्ध दुरोधन का सैन्य सेना से आये ।  
अश्वीहर्षा का युद्ध दुरोधन का सैन्य सेना से आये ।



ता अजीनवास ५५ विताया न हा वर  
इन्हें लायक है न ही मल्लत चयक चला  
मन कुछ हाने न बाद न पाँव, कौनवा में  
जायपवक राजा, म्हापत करमें की इच्छा रवने  
ही वरवा में युद्ध करन की उनकी इच्छा  
नहीं है युद्ध करन आकाश जल सभके  
मान जायमें भीषण लयाक्रांड लगा न  
बाहन है कि फंदन को कोई नष्ट न पहुँच  
उनका राजा रुद्र वापस है दिशा झा  
दुर्गोधन का अपने बल पर अन्तर्ग विश्वास  
है अन्धा इसके अनापत्तन सैनिक वही  
आय हुआ है इतना वह समझत होगा कि  
मीन मा को होंगी, विश्व की वरमाया  
उसी के गले में पहनायी जायेगी। अग नयध  
में यह केवल उसका ध्रुम मात्र है। दुर्गोधन  
की सेना कितनी भी बलशाली व अधिकाधिक

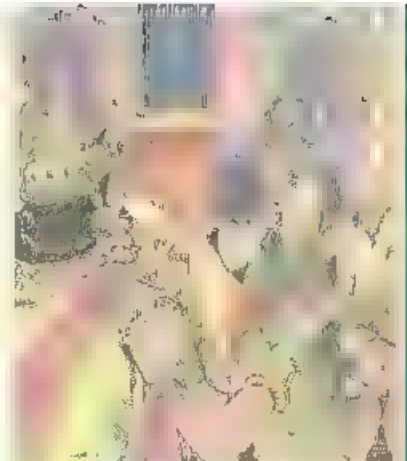
पांडवों को क्यों नहीं? मला के इन अधिकार  
प्राप्ति के योग्य नहीं? क्या बापमें से छोड़  
इसका कारण बता सकते हैं? आप भूलें नहीं  
हाम। १५ द्वा द्वे उन न पाँववा न कारा  
मनाया। उनके अधिकार को उनके सुपूर्द न  
करके उन्हें कितने कह पहुँचाये। पांडवों के  
पुण्यों ने ही उन्हें मरने से बचाया नहीं तो  
वे कभी के मर चुके होते। यही नहीं, पांडवों  
ने आपनी शक्ति के आधार पर जो राज्य जीते,  
तुम्हीं भी धृतराष्ट्र के पुत्रों ने हड़प लिवा,  
मापावी जुए में तराकर उनसे छीन लिया।  
पाप और अकृति ने उनका साथ दिया।  
उनके अत्याय व अधर्म में भरे कुत्तों में आस  
में भी का सा काम किया। तेरह साल पांडवों  
ने अपनी पत्नी समेत वनवास बिताया।  
वर्णनातीत कह छोड़ें, विराट नगर में उन्होंने

आप ही जाँच ही करत है। यह जान चुकी  
न भगवान नहीं है कि पांडवों ने बहुत ही कष्ट  
इन सवें महामात्ति अति परमात्मा है।  
अर्जुन जो कि अन्तर्गत के पुराण में लोच  
है, उसको आदरों का रंग सारे नहा।  
वह महाकाय है, ब्रह्मपुधारी इंद्र भी उसके  
सम्मुख निक नहीं चलता। शेष पांडव भी  
महापुरुष हैं।

अध के बीच समस्त लोग हैं कभी  
न डाहू और कहीं नका अधिपति,  
पापन को मोकता, सब जानत है धर्मगत  
वचनबद्ध होकर ताड़नों की पत्ता समेत  
करण गया। इस वषट्क वीरवर न उनके  
नाथ काई अन्धाय या अपराध नहीं किया।  
अधिक वंश में पुनर्जित हुए और निजी  
जान के अंतर्गत उन्हें अस्थि जाना पड़ा।  
अब राज्य मामला उनकी मूर्खता नहीं तो शौर  
न है? दुर्गोधन पांडवों का बल देखकर  
इतना बल मय नहीं है। उन्हें एक पग सर  
की लोच कवापि नहीं देगा। थगत वे फिर  
ने राजा न हने को नही एक वर वर  
ननवास करा होगा। राजा पार्थिव को मर  
व धर्म चयन है युद्ध करने अनारुह रह  
है।

अध कण की उग प्रचंडता जाना प  
निद्र गया और कहा। कण इस लक्ष्य जाना  
न गया न भ। अगर युद्ध होगा तो लक्ष्य की  
की तरह जलकर गया है। अधक।

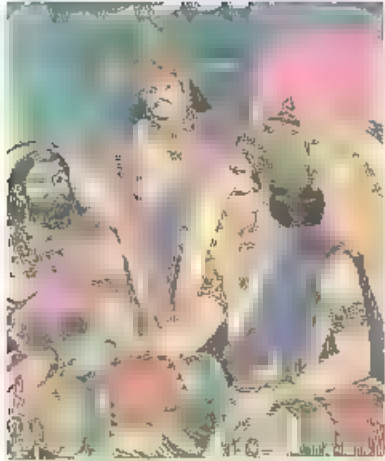
अध धृतराष्ट्र ने अन्धकार कर्ता हुए वंश  
की वंश और धर्म अन्तर उस मानवान  
नियमि और्य की ज्ञानों में मछोई है और  
वंश का कह रहे हैं, हमारी अन्तर्द के लिए



ही कह रहे हैं। फिर दृष्ट के पुराहित में  
धृतराष्ट्र ने कहा "महाशय मैं इस विषय  
पर गंभीर रूप से सोचूंगा और अपना उत्तर  
समय द्वारा पांडवों को भिजवाऊंगा। आप  
झीट सकते हैं।"

धृतराष्ट्र ने परोहिता को सादर बिदा किया  
और सजय को बुलाकर कहा "मंजय, तुम  
शीघ्र ही उपलब्ध आओ। धर्मराज से मिलने  
और उनका कुशल सवाल जानो। वे मुकुशाल  
न सफलतापूर्वक वनवास व अज्ञातवास पूरा  
करके जाये। इस बात पर उन्हें बधाई दी।  
फिर कृष्ण व युद्ध में उनकी सहायता करने  
अर्थ तनी को तद्विषय प्रणाम करो। हमारे  
कारण पांडवों ने अनेकों कष्ट सहें। मुझे ऐसा  
कोई कारण स्मरण में नहीं आता, जिसके  
कारण उनकी वजह में हमें कष्ट सहने पड़े।





हो। जब सोचता हूँ कि धर्मराज लठ्ठकर हलसे युद्ध करनेवाला है, तो मैं शयन के कौप बठ्ठा दूँ। भाग्य शान्त महाराज हैं। युद्ध करना मेरा स्वभाव का नहीं है। मैंने अभी तक युद्ध नहीं किया है, स्वयं निर्णय कर लो। बस, मैं लड़ाई नहीं चाहता हूँ। क युद्ध न हो। उन्हें समझाना मुझ पर निर्भर है।

संजय एवं मेरे बैठकर उपप्लव्य पहुंचा धर्मराज से मिला। कुशल-संगल की जानकारी के बाद संजय ने उन सबकी उपस्थिति में बोला कि

‘धृतराष्ट्र शांति चाहते हैं। यह संदेश आप तक पहुंचाने के लिए ही उन्होंने मुझे यहाँ भेजा। लोक उन्हें आवर्श पुरुष मानता है, अतः उनमें थोड़ी-सी कुराई दिखायी पड़े, वह सौ गुना अधिक ही लगती है। युद्ध में

क्रिमवी अने हांग और क्रिमवी हर यह निर्णय नहीं किया जा सकता। किन्तु एक बात सत्य है कि युद्ध दोगो पक्षों के लिए हानिकारक है। राजा का मानकर राज्य-प्राप्ति की संकल्पना भी सम्भवित नहीं की जा सकती। मारकर राज्याधिकार हस्तगत करने की चेष्टा भी भिन्न नहीं अपनायी। मरण से बचता है मरण। वेबता भी पंडितों को हार नहीं सकते। कौरव-बल भी कुछ कम नहीं। मेरा विश्वास है कि इन दोनों बलों में युद्ध छिड़ जाय तो किमी पक्ष में शान्त नश्य है किन्तु यह विजय निष्प्रयोजक है। अपने क्रिम को भी सुख प्राप्त होनेवाला नहीं है। मैं निश्चय करता हूँ कि पांडव और कौरवों में युद्ध के पक्ष से हटकर हमें हीन मार्ग पर नहीं चलने। मैं हाथ जोड़कर आप सबसे प्रार्थना करता हूँ कि शांति स्थापित करने के लिए आप सभी कष्टिबद्ध हो।’

धर्मराज ने अपना अधिप्राय व्यक्त करते हुए कहा ‘संजय क्या तुम्हीं मैंने यह बताया कि युद्ध अनिवार्य है। क्या कभी मैंने इस हिमात्मक चर्चा का प्रस्ताव दिया है। मैं उस सूत्र को नहीं हूँ जो शांति की स्थापना की जाह में युद्ध करना चाहते हैं। जो बुद्धिमान है, जो शुद्ध चित्त का है, उसे जिन प्रकार अपने मुख के बारे में सोचना चाहिये, उस प्रकार दूसरों के सुख का भी ध्यान रखना चाहिये। जो द्रव्य में अग्नि प्रज्वलित करने यह कहें कि बाप रे, मैं विपत्ति में फँस गया यह महामूर्ख है। दूध दुग्धधन का समर्थन करने हुए मृत्युवादी या कैम सुखी रह सकते हैं। मायावी क्या जिन दिन खेल गया, सो

दिन में कौरवों का विनाश आरम्भ हो गया किन्तु कौरवों में महजौव विनाश में मुझे कोई आरति नहीं है। हमसे पहले में कुछ कष्ट किये गये, सभी भुला दूँगा। बस, ईदप्रस्थ माय मुझ में। दुर्वाधन है राजाज बनकर रहे।’

संजय ने कहा ‘धर्मराज तुमने कभी भी धर्म का पक्ष नहीं छोड़ा। तुम्हारे राजभोग के लिए अपनी कीर्ति को शायद बलि दे कर कर्त्तव्य करोगे। युद्ध का वैचारिक त्याग। कौरव तुम्हें राज्य नहीं देंगे। युद्ध करके राज्य प्राप्त करने में हमारा है वाचन-वृत्ति।’

संजय के बताये धर्म अधर्म के सूत्र के धर्मराज ने नहीं माना। उसने संजय से स्पष्ट कहा ‘विपत्तियों से मुक्त होने के लिए अपनाया जानेवाला अधर्म भी धर्म ही माना जायेगा। श्रीकृष्ण जो कहेगा, वही मेरे लिए धर्म है।’

कृष्ण ने संजय से कहा ‘तुम शांति, शांति की रट लगा रहे हो। क्या तुम्हारा निश्चय है कि युद्ध करना राजाओं का धर्म नहीं। धृतराष्ट्र के पुत्र अधर्म करने पर तुले हुए हैं। पांडवों की संपत्ति को दुर्वाधन ने अपना लिया जो धर्म की नीतियों के विरुद्ध है। इस राजधर्म

कहाँ रह गया? क्या रह गया? कौरवों और दुर्वाधन में श्रेष्ठ ही कहाँ रह गया? आज तक वह पांडवों की संपत्ति को भोगता रहा। अब वह उनकी संपत्ति क्यों नहीं लौटाता? दूसरों की संपत्ति पर उसका इतना मोह क्यों? क्या यह उसकी हीन प्रवृत्ति का सूचक नहीं? अपना राज्य पाने के लिए हम युद्ध करके मर भी जाएँ तो इस मौत में भी सुख है। जानो कौरवों से यह बात स्पष्ट कहो।’

संजय ने सबसे बिनती की कि उससे कोई भूल हो गयी हो तो वे उसे क्षमा करें। सबसे बिदा लेकर जब वह निकलने ही वाला था, तब धर्मराज ने कहा ‘संजय, हम सचमुच शांति चाहते हैं। अगर धृतराष्ट्र भी सचमुच शांति की हो कसना करने ही तो उसे कहना पश्य का एक भाग ही मही, हमें दे कहना कि हम पाँचों को पाँच गौंन माय में कुशल्यन, कुवत्थन, सावंधी, बहणावन और एक और गौव, जो वे देना चाहते हैं, हमें दे। सब सुघां रह सकते हैं। मैं शांति के लिए जितना समर्थ हूँ, उनका ही समर्थ हूँ युद्ध के लिए भी।’

इस संदेश को लेकर संजय हस्तिनापुर निकला।









## दूरदृष्टि

है नापुर्न में नारीश्वर नामक साधारण परिवार था। एक बच्ची थी। वह अपनी सगाई और दो बहनों के साथ जन्म काट रहा था। इसकी एक बहन थी जिसकी शादी सुभाषचंद्र के मित्रों के बर्धन से की और सम्मान में दिया। चर्चन भी सामान्य परिवार का ही था।

श्री ११वें के अ ब बर्धन दिन की बीमारी का शिकार हो गया। इस स्थिति में नारीश्वर की पत्नी वाकिली ने अपने पति को सम्मान और चर्चन को पत्नी समेत अपने गृह छोड़ दिया। अन्त में वह उसे दिखलगा और इसकी शिक्षा करवाई। बर्धन की परिस्थिति कम में कोई कष्ट नहीं रहा। बर्धन बहुत ही मर्यादा में रहने लगा।

नारीश्वर की पत्नी वाकिली ने अपने बच्ची को नाम दिया। वह नाम था 'नारीश्वर'। नारीश्वर और नारीश्वर की पत्नी वाकिली ने अपने बच्ची को नाम दिया। वह नाम था 'नारीश्वर'। नारीश्वर और नारीश्वर की पत्नी वाकिली ने अपने बच्ची को नाम दिया। वह नाम था 'नारीश्वर'।

उसकी इस बर्धन का वह उल्लेख इस पंक्ति में किया है। 'नारीश्वर' नामक बच्ची का नाम था 'नारीश्वर'। नारीश्वर और नारीश्वर की पत्नी वाकिली ने अपने बच्ची को नाम दिया। वह नाम था 'नारीश्वर'।

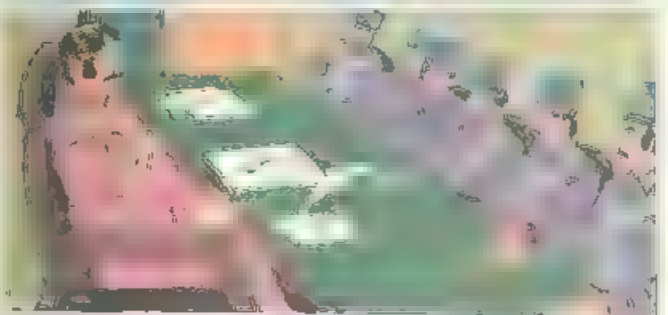
नारीश्वर, आपकी बर्धन की पत्नी वाकिली ने अपने बच्ची को नाम दिया। वह नाम था 'नारीश्वर'। नारीश्वर और नारीश्वर की पत्नी वाकिली ने अपने बच्ची को नाम दिया। वह नाम था 'नारीश्वर'। नारीश्वर और नारीश्वर की पत्नी वाकिली ने अपने बच्ची को नाम दिया। वह नाम था 'नारीश्वर'।

नारीश्वर



स्वतंत्रता की स्थापना के अन्तर्गत नारीश्वर का नाम था 'नारीश्वर'।

## पहला स्वतंत्रता - संग्राम



नारीश्वर, आपकी बर्धन की पत्नी वाकिली ने अपने बच्ची को नाम दिया। वह नाम था 'नारीश्वर'। नारीश्वर और नारीश्वर की पत्नी वाकिली ने अपने बच्ची को नाम दिया। वह नाम था 'नारीश्वर'। नारीश्वर और नारीश्वर की पत्नी वाकिली ने अपने बच्ची को नाम दिया। वह नाम था 'नारीश्वर'।

नारीश्वर, आपकी बर्धन की पत्नी वाकिली ने अपने बच्ची को नाम दिया। वह नाम था 'नारीश्वर'। नारीश्वर और नारीश्वर की पत्नी वाकिली ने अपने बच्ची को नाम दिया। वह नाम था 'नारीश्वर'। नारीश्वर और नारीश्वर की पत्नी वाकिली ने अपने बच्ची को नाम दिया। वह नाम था 'नारीश्वर'।

नारीश्वर, आपकी बर्धन की पत्नी वाकिली ने अपने बच्ची को नाम दिया। वह नाम था 'नारीश्वर'। नारीश्वर और नारीश्वर की पत्नी वाकिली ने अपने बच्ची को नाम दिया। वह नाम था 'नारीश्वर'। नारीश्वर और नारीश्वर की पत्नी वाकिली ने अपने बच्ची को नाम दिया। वह नाम था 'नारीश्वर'।



तुल जायेगी तो मेरी दृष्टि में वह मूर्खता ही है। हमारे हाथों उसकी हार निश्चित है। आप लोग जानते भी होंगे कि उसके पास एक प्रशिक्षित सेना भी नहीं है। जो सेना भी वह हटा लो गयी। उसपर मुझे क्या आता है।”

एक सिपाही ने कहा “मानिक, आप इस गलतफहमी में मत रहिये कि वे एक साधारण लो हैं। उनकी वीरता हमने स्वयं अपनी आँखों देखी। प्रजा भी उनके लिए मर-मिटने तैयार है। अपने राज्य की रक्षा के लिए वे कुछ भी करने को तैयार हैं। सब कहा जाए तो ऐसी असाधारण धैर्य-साहसवाली लो को हमने आज तक नहीं देखा।” सर हाग रोज ने इससे हुए कहा “असाधारण धैर्य-साहसवाली रानी मातृलो को घमकाती है,

नितहायों पर अपना रोज जमाती है। आखिर वह करती क्या है? आपकी दृष्टि में वह असाधारण वीर-शूर नारी लगती होगी। किन्तु युद्ध-क्षेत्र में उतरकर युद्ध करना बिल्कुल ही अलग बात है। कब तक वह हमारी तोपों का सामना कर पायेगी? क्षण भर में उसे और उसकी सेना को राख कर देंगे।”

एक और सिपाही उसके अभिप्राय से सहमत सहो हुआ। उसने कहा “सर, हम आपके सेवक हैं। आपके निश्चयमान हैं। परंतु हमने जो कहा भी बड़ी सच है। किसी को भी क्षण भर में तोपों से उड़ाया जा सकता है। परंतु क्या आप सपना देख रहे हैं कि वे आपको ऐसा मीका देंगी। आप तोपों से लैस जायेगी तो वह भी तोपों सहित ही युद्ध-क्षेत्र में प्रवेश करेंगी।”

“उसके पास कितनी तोपें होंगी?” हाग रोज ने पूछा। बेचारे सिपाहियों की मालुम नहीं था कि ज्ञान बृद्धकर ही रहस्य जानने के उद्देश्य से ही हाग रोज यह प्रश्न पार रहा है।

“हमने गिना नहीं। सब तोपें प्रदर्शित नहीं हुई। वे सारी की सारी तोपें गोले-बारूद की सामग्री रखे जानेवाले गोदाम के पास ही कहीं हैं। यह गोदाम राजभवन की पूर्वी दिशा में है।” एक युद्ध सिपाही ने कहा।

हाग रोज ने रेखाचित्र को देखते हुए कहा “अर्थात् जिस जगह के बारे में तुम कह रहे थे, वह वही भंडार है, जिसके बगल में बरगद का वृक्ष भी है। उसी के जंगल में गोले-बारूद की सामग्री का गोदाम भी है। यही न?”

स्थानीय सिपाहियों ने एक-दूसरे को देखा। उनकी आँखों में यह भाव स्पष्ट झलक रहा था कि अन्तजाने में राजभवन का यह रहस्य उसे बताकर हमने बड़ा अपराध किया।

“यजमानों के प्रति विश्वासपात्र होकर रहना आपकी रीति है। क्या भूल गये कि यजमानों को आप अपने माता-पिता समान गौरव देते हैं। परंपराओं से षष्ठी आती हुई वह आपकी नीति है, आपका लक्षण है। कंपनी आपका मालिक है। आप लोगों को ज्ञाना, बापड़ा देकर पालती है। उसकी सहायता करना आपकी जिम्मेदारी है। आप अगर अपनी जिम्मेदारी सही रूप से संभालेंगे तो आपको बहुत इनाम भी मिलेंगे।” कहते हुए उसने सिपाहियों की सराहना की और उन्हें सोने के सिक्के दिये।

★ ★ ★

रानी लक्ष्मीबाई ने राजभवन में सेनावि-पतियों व पुर प्रमुखों को संबोधित करते हुए कहा “बंधु मित्रो, राजानो, भादव्यो, हमारे नगर में कंपनी के एक कार्यालय का ध्वंस करके आपमें से कुछ लोग समझ रहे हैं कि कंपनी का पिछ हट गया, हमें स्वतंत्रता मिल गयी। किन्तु ऐसा समझना आपकी भूल है। सात समुद्रों को पार करके आये वे एक-दो चोटों से बचनेवाले नहीं हैं। जोक की तरह रक्त वृत्तों के बाद ही वे हमारी मातृभूमि को शायद छोड़कर जाएँ। वे इतनी आसानी से यहाँ से नहीं जाएँगे। समाचार भी प्राप्त हुआ कि वे झांसी की तरफ बढ़े चले आ रहे हैं। इस स्थिति में हम क्या करें और हमारा कर्तव्य क्या हो, प्रकाश ढालिये। मैं आपकी सलाहों



की प्रतीक्षा में हूँ।” झांसी ने गंभीर स्वर में कहा।

तमिज चुप रहे। कुछ समय तक फैली चुप्पी को तोड़ते हुए राजकुटुंब के एक वृद्ध ने कहा “देवी, हम आपको सलाहें देने नहीं आये। आपकी आज्ञाओं का पालन करने आये हैं।”

“बहुत प्रसन्न हुई। आप लोग इस भूमि पर जन्मे वीर कुमार हैं। अपनी मातृभूमि की लाज रखने के लिए रक्त तर्पण देकर अपनी मातृभूमि को पुनीत करने के लिए नहीं पिछड़ेगी, यह मेरा बड़ा विश्वास है।” आवेश-भरे स्वर में रानी ने कहा।

“आपने बिल्कुल सही कहा। हम बापकी आज्ञा की पालन करने में कोई कसर नहीं रखेंगे।” सभी ने मुक्तकंठ से घोषणा की।





“मातृभूमि की रक्षा या मरण ? अब यह युद्ध छिड़ेगा, तब हमें मरण के लिए तैयार होना होगा” और ओझाले स्वर में जल्मीबाई ने कहा।

“हम इसे अपना भाग्य समझते हैं भाई” सभिकों ने और जानबूझकर कहा। ज़ान्सी को बहुत समय तक प्रतीक्षा करनी नहीं पड़ी। चंद्रह दिनों के अंदर ही शत्रुसेना के आने का पता लग गया। शिकारियों ने निकलकर ज़ान्सी की सेना किले के आसपास इकट्ठी हो गयीं। रानी ने भवन के ऊपर बड़े होकर सैनिकों को उनका कर्तव्य बताया। सैनिकों ने सैनिक वस्त्र पहन लिये और जम्हों पर सवार होकर तेज़ी से आगे बढ़े। जयजय नाद करते हुए वे सब ज़ान्सी बाई के पीछे-पीछे चले।

पूरा दिन भयंकर युद्ध हुआ। सायंकाल

हुआ। युद्ध भूमि में व्याप्त धूलि के कारण सूर्यकिरण भी पूरी तरह से दिखायी नहीं पड़ा। धूलि के नेत्रों के छंट जाने के साथ देखा गया कि शत्रु सेना पीछे हट गयी।

“हमारी माता ज़ान्सी तहसीलबाई जिल्दा-बाद” हजारों सैनिकों ने प्रजा ने होर-होर से नारे लगाये।

रानी भवन लौटीं और शयन-संदिग्ध में पहुँची। वहाँ उन्होंने देखा कि रतनों से सुसज्जित शय्या पर उनका दत्तक पुत्र सो रहा है। परिचारिका के लाये दोप की कांति में रानी अपने पुत्र के प्रशान्त वदन को निहारती रही।

बाद वे घायल सिपाहियों के पास गयीं। पास रहकर उनकी सहाय चिकित्सा करवायी। फिर वे घायल घोड़ों के पास गयीं। अन्ध पालकों के द्वारा उनके द्वारे में जानकारी प्राप्त की। प्रातःकाल तक बिना सोये इन्हीं कार्यक्रमों में मग्न रही।

सूर्योदय होते ही पुनः युद्ध आरंभ हुआ। अब ज़ान्सी के सैनिकों को तलवारों और बंदूकों का ही नहीं बल्कि तोपों का भी सामना करना पड़ा। शत्रु पक्ष में हजारों सैनिक मारे गये। सूर्यास्त के बाद भी युद्ध होता रहा। हवाएँ आकाश में भयंकर अग्नि दिखायी पड़ी। ठीक आधी रात को राजभवन से पूरी तोप के गोले से भर हाव-होज का प्रधान भेनाधि-कारी मर गया। सेनाधिपति चिल्लाता रहा “रानी स्वयं यह काम करा रही हैं”।

इस आकास्मिक घटना को देखकर सर हाव रोज स्तब्ध रह गया। थोड़ी देर के बाद वह संभल गया और अपना युद्ध-व्यूह बदल दिया।

दूसरे दिन नगर के सैनिकों से बाकी सेना लड़ती रही और शेष बाकी सेना राजभवन की पूर्वी विभा की ओर बढ़ी। ज़ान्सी की सेना के अधिकारीगण इस विषय में अनभिज्ञ रहे। ज़ान्सी के प्रधान द्वार की सुरक्षा में ही ज़ान्सी की सेना विमग्न रहो।

अकस्मात् भूमि को भी कंपा देनेवाली ध्वनि सुनायी पड़ी। राजभवन का पूर्वी क्षेत्र अभिपर्वत की तरह फूट पड़ा। पत्थर आदि आकाश में उड़े। कानों को फोड़नेवाली ध्वनियाँ बहुत समय तक प्रतिध्वनित होती रहीं।

गोले-बारूद की सामग्री जिस गोदाम में थी, उस गोदाम को शत्रुओं ने तोप से उड़ा दिया। अपनी ही सेना के स्थानीय अधिकारियों को बख़्शीश देकर जान लिया कि गोले-बारूद की सामग्री कहाँ है। विशाल बरगद का वृक्ष तथा बबूल के पेड़ गल गये। बहुतों की जानें गयीं।

ज़ान्सी की सेना एक तरफ युद्ध करती रही पर राजभवन में विषाद के बादल छा गये। इसमें एक शुभ समाचार मिला कि नाना साहेब का पुत्र रोगानाथक तलियायेंपी

रानी की रक्षा के लिए आ रहा है।

क्रमशः ब्रिटिश सेनाएँ राजभवन के निकट पहुँच गयीं। परंतु वे अंदर घुस नहीं पायीं। तोपों के शिकार हुए शिथिल धवन की मरम्मत रातों रात करवायी गयी। वहाँ सैनिकों को कड़ा पहरा रखा गया। ब्रिटिश सैनिक उनपर चढ़ने के लिए सीढ़ियाँ ले आये। शिक, मैकेल जान, नानस, फाक्स नामक चार सैनिक अधिकारी सीढ़ियों पर चढ़ते गये। पर बंदूकों से वे छोटे-से पक्षियों की तरह भून दिये गये गये। वे नीचे गिरकर मर गये।

शत्रुसेना सुदृढ़त नम प्रधान द्वार के पास पहुँची तब दूसरे ही क्षण दुरही की ध्वनि सुनायी पड़ी। साथ ही किले के बुरजों में तोपों के गोले शत्रुसेना पर बरसाये गये। वहाँ अग्नि ज्वाला की तरह प्रज्वलित हुई। भयंकर ध्वनियों के साथ गूँजते हुए आकाश में ललबली मच गयी। तरह तरह के आर्बुध शत्रु-सेना पर फेंके जाने लगे। ब्रिटिश सेना को यह कहकर सावधान किया कि वे तुरंत वहाँ से चली जाएँ।

संक्षेप





## बोलनेवाला फल

एक राजा के पास अगिनत गायें थीं। हर रोज पशु-पालक उन्हें पहाड़ी पतियों में चराने ले जाया करते थे। किन्तु शाम को जब वे लौटते थे, तब गायों की संख्या कम हो जाती थी। राजा ने बड़ी सावधानी बरती, बहुत ही सुव्यवस्थित रूप से आवश्यक प्रबंध किये, फिर भी गायों का गायब होना जारी रहा। पशु-पालकों ने राजा से पूछा कि ऐसा क्यों हो रहा है। उन्होंने कहा "हम बड़ी ही सावधानी से पहपा रहे हैं। गायों को हम अपनी आँखों से कभी भी ओलस होने नहीं देते। हमने आज तक किसी को गायों के पास आते हुए भी नहीं देखा। मामूँ नहीं गायें कैसे गायब हो रही हैं।" राजा को लगा कि अवश्य ही इसके पीछे कोई रहस्य है। अपने तीनों बेटों को गायब होते हुए गायों के बारे में जानकारी पाने के लिए बंगल भेजा।

राजकुमारों ने दिन भर यात्रा की और

एक अरण्य में पहुँचे। उन्होंने एक विकृत आकार की एक ली को देखा। उस ली ने उनसे पूछा, "बेटों, कहाँ जा रहे हो?"

राजकुमारों ने चिढ़ते हुए कहा "हम कहीं भी जाएँ, इससे तुम्हारा क्या मतलब? तुम चलती बनो?"

वह ली अपने आप बढ़बढ़ाती हुई चली गयी। राजकुमार वहीं से निकले और एक किले में पहुँचे। उन्होंने देखा कि उनकी गायब गायें वहाँ चंधी पड़ी हैं। और बंजर गये तो उन्होंने सोचा था कि एक बूढ़ी राक्षसी को देखा। उनकी हलचल से वह राक्षसी जाग उठी।

राजकुमारों ने कहा "दादी, कोई काम हो तो दिखाना, हम यहीं रहेगे।" उन्होंने सोचा कि इस राक्षसी से गायों को छुड़ाकर ले जाना इतना आसान काम नहीं है। इसलिए उन्होंने काम का बहाना किया और मीठा पाकर गायों को छुड़ाकर ले जाने की उन्होंने योजना बनायी।

राक्षसी ने जान लिया कि वे गायों के लिए ही यहाँ आये। वह बड़ी ही चालाक थी। शारीरिक शक्ति उसकी घट गयी इसलिए अपने गाँवाँ उपायों से शत्रुओं को मार डालती रहती थी। उसने राजकुमारों को भी मारने का निश्चय करके उनसे कहा "बच्छा बेटों, गायों का दूध दुहने का समय हो गया। जाओ और दूध दुहकर ले आओ। कल से तुम ही लोग गायों को पालो-पोसो।"

राजकुमार दूध दुहने बने गये। बरतनों में दूध भरकर ले आये। राक्षसी ने उन्हें फिर से बुलाकर कहा "बच्चो, भूख लगती होगी। मामूँ नहीं, कब खाया होगा। यह दूध पीकर अपना पेट भर लेना।" उसने दूध से भरे तीन बरतन उन्हें दिये। राजकुमार यह तय जानते नहीं थे। उन्होंने दूध पी लिया और वहीं के वहीं मर गये। राक्षसी ने उन्हें एक संवूक में छिपा दिया।

तब अर्ध रात्रि गुजर गया, फिर भी राजकुमार नहीं लौटे। राजा को चिंता काये जा रही थी। राजा के यहाँ गोविंद नामक एक बुजुर्ग पशु-पालक था। उसने स्नेहपूर्वक राजा के पास आकर कहा कि मैं राजकुमारों व गायब गायों का पता लगाकर आऊँगा। राजा ने उसे जाने की अनुमति दी।

गोविंद भी उसी दिशा में गया, जिस दिशा में राजकुमार गये। वही विकृत आकार की ली उसे दिखायी पड़ी। उसने पूछा "कहाँ जा रहे हो बेटे?"

गोविंद राजकुमारों की तरह उस ली पर गारा नहीं हुआ। उसने सोचा कि शामद गायों और राजकुमारों के बारे में यह ली



जानती हो, इसलिए उसने अपने काम का बिबरण दिया।

उस ली ने कहा "पोंडी दूर और जावोंगे तो तुम्हें एक किला दिखायी देगा। उसमें एक चालाक राक्षसी रहती है। मेरी बहन की मदद लेकर उसी ने राजा की गायों को चुराया। ज़रूरत पूरी हो जाने के बाद उसने मेरी बहन को मार डाला। अब तक उसने तुम्हारे राजा के बेटों को भी मार डाला होगा। मैं पहले ही उनमें यह रहस्य बताना चाहती थी पर उन्होंने मेरी कोई न सुनी और मुझसे चिढ़कर चले गये।"

गोविंद ने पूछा "तुम्हारा बहन कौन है? उस राक्षसी को हमारी गायों को चुराने की क्या जरूरत था पत्नी?"

उस ली ने कहा "वह राक्षसी बूढ़ी है।





इस लुहा में मेरे भरना उसके लिए कठिन हो गया। लुहा में राख की गांधी पर उसकी दृष्टि पड़ी। मेरी बहन भ्रम-भ्रम जानती है। उस राक्षसी ने मेरी बहन से दोस्ती की। उसने मेरी बहन से वादा किया कि आधी राखें लुहा में दूँगी और मेरी बहन ने उसकी बातों का विश्वास करके गांधी गांधी कर दी। उन्हें अपने किले में बंद किया। फिर अपनी ज़रूरत पूरी होने के बाद मेरी बहन को मार डाला। मैं अपनी बहन की हत्या का बदला लेना चाहती हूँ। मैं तो बूढ़ी हूँ। मुझमें अब रक्त-रक्त की शक्त नहीं रही। मेरा एक ही सख्त है और वह है उस राक्षसी से बदला।”

गोविंद ने सब कुछ सुनने के बाद कहा “कोई उपाय तो तो बताओ, जिससे मैं राजकुमारों और गांधी को राक्षसी से छुड़ा

सूँ, बचा लूँ।”

“मेरी भ्रम-भक्तियों नहीं रही, फिर भी मेरे पास दो वस्तु बाकी हैं।” कहती हुई उसने एक फल और तीन पत्थर गोविंद के हाथ में रखे और उस विकृत रूप की स्त्री ने कहा “वह फल पहले ही तुम पर आनेवाली विपत्ति के बारे में तुम्हें बता देगा। वह बोलनेवाला फल है। जब इसकी ज़रूरत नहीं होगी तब इसके अंदर वह बीज निकालो, गांधी से खाओ। मेरे हुए राजकुमारों पर लिडक दो तो फिर मेरे जिन्दा हो जाएंगे। इन पत्थरों को नीचे फेंको तो तुम्हें जो चाहिये वह मिलेगा। मुझे विश्वास है कि तुम राक्षसी को मार जाओगे। मुझे विश्वास है कि तुम यह काम कर पाओगे। तुम्हारा काम भी सफल होगा और मेरा लक्ष्य भी पूरा होगा।” उस बूढ़ी की बी हुई वस्तुओं को लेकर गोविंद किले की तरफ बढ़ा। किले के अंदर जाने के बाद वह राक्षसी से मिला और कोई काम सौंपने की उससे विनती की। राक्षसी जान गयी कि यह भी गांधी के लिए आया तो उसने कहा “ठीक है, मेरी गांधी की देखभाल करने रहना।” फिर वह अंदर गयी और दूध ले आकर बड़े ही प्यार से उसे पीने के लिए कहा।

“पीना मत। उसमें विष है” फल ने गोविंद को सावधान किया। राक्षसी की आँख से बचाकर गोविंद ने वह दूध को फेंक दिया। राक्षसी को इस बात पर आश्चर्य हुआ कि दूध पीने के बाद भी वह जिन्दा है तो उसने कहा “वह खट है। बहुत शक गये होंगे। जाओ और सो जाओ।”

“सोना मत। जाई मैं फिर जाओगे” फल

ने फिर से उसे सावधान किया। राक्षसी के चले जाने के बाद गोविंद ने वाट उठायी और देखा तो वहाँ काँटों से भरी गहरी खाई है। दूसरी बार भी वह मौत से बच गया, इसपर उसे चुबरी हुई।

गोविंद ने राजकुमारों को किले पर में डूँडा। उसे वह पेटी दिखायी पड़ी, जिसमें मृत राजकुमार छिपाये गये थे। विकृत आकार की स्त्री को बहन के भव का पता नहीं चला। राजकुमारों के शवों को ढोकर ले जाना असंभव है। इसलिए उसने निर्णय कर लिया कि अब फल भी आपसपकता नहीं होगी। उसमें से बीज निकाला, बत से खून खाओ और उस जल को राजकुमारों पर छिड़का। वे तुरंत जीवित हुए और गोविंद को पहचान लिया।

फिर चारों गांधी की शाला में गये। पशुओं को लुहा और उन्हें होंबते हुए किले के बाहर आ गये। गोविंद ने विकृत आकार की स्त्री को खोजा, पर वह कहीं नहीं मिली।

इतने में राक्षसी नींद से जागी। उसे संदेह हुआ पशु शाला गयी तो देखा कि वहाँ गांधी नहीं हैं। उसे मालूम हो गया कि वह गोविंद का ही काम है। वह चिल्लाती हुई किले के

बाहर आयी।

राजकुमार और गोविंद ने राक्षसी की चिल्लाहटें सुनीं। वह लंके-लंके एक घर की हुई उनके समीप आने लगी। गोविंद को उन पत्थरों की याद आयी, जो उसके पास ही थे। उसने एक पत्थर फेंका और कहा कि वहाँ काँटे बिछ जाएं।

काँटों में फंसी बूढ़ी राक्षसी बड़ी मुश्किल से बाहर आ पायी। गोविंद ने एक और पत्थर फेंका। राक्षसी इस बार आग के बीच फंस गयी। जब तक वह आग नहीं बुझी तब तक राक्षसी एक ज्वालन भी जाने नहीं बढ़ा सकी। इस बीच गोविंद और राजकुमार बहुत दूर तक चले गये।

फिर एक और बार राक्षसी को अपने निकट पहुँचते हुए देखकर गोविंद ने तीसरा पत्थर फेंका। वह जाकर एक नहर में गिर गयी। नहर उमड़ने लगी। फिर भी राक्षसी पानी में उतरी और पार करने की कोशिश करने लगी। किन्तु प्रवाह बढ़ता गया और उसमें राक्षसी बह गयी।

राजा उसके काम पर बहुत ही खुश हुआ और उसका बड़े पैमाने पर सत्कार किया।

